यज्ञ

(उत्कृष्टता के 61 वर्ष)

अंक 15

वर्ष 2023

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

नई दिल्ली

परिकल्पना

अंतरराष्ट्रीय व्यापार अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं शिक्षा के क्षेत्र के रूप में श्रेष्ठतम शैक्षिक केंद्र के रूप में स्थापित होना।

ध्येय

ज्ञानार्जन हेतु एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना और उसे पोषित करना जिससे कि शिक्षार्थी समाज के प्रति संवेदनशीलता के साथ अंतरराष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में पथ प्रदर्शक बनने में सक्षम हो सकें।

हिंदी दिवस 2023

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

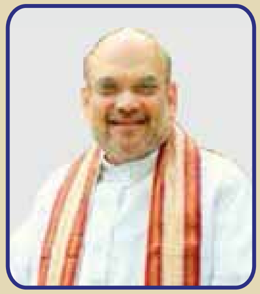

प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम **'हिंदी'** है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ–साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन–जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **'कंठस्थ'** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में **'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन'** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **'हिंदी शब्द सिंधु'** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा–भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी–अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई–मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

(अमित शाह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023

कुलपति की कलम से...

प्रिय साथियों,

प्रसन्नता का विषय है कि करोना काल के बाद संस्थान में राजभाषा कार्यों के अन्तर्गत गृह पत्रिका ''यज्ञ 2023'' अंक–15, का प्रकाशन किया जा रहा है। इससे पूर्व अंक 14 व 13 को इ–पत्रिका के रूप में प्रकाशन किया गया था। यज्ञ 2023 पत्रिका के प्रकाशन की निरन्तरता इस बात का द्योतक है कि संस्थान के सहकर्मियों ने हिंदी विषयक अपार रूचि को प्रदर्शित किया है। दूसरे, पत्रिका की निरन्तरता को बनाये रखने तथा इसकी गुणवत्ता, प्रासंगिकता तथा सकारात्मक दृष्टिकोण के लिए संस्थान के हिंदी अनुभाग का योगदान महत्वपूर्ण है। जिसके कारण संस्थान में हिंदी में काम को बल मिल रहा है।

राजभाषा हिंदी आज विदेशों में प्रचलित हो रही है। विकासशील भारत में बढ़ते रोजगार के अवसर को देखते हुए कई विदेशी उद्योग–घराने अपने हित में हिंदी को आत्मसात करने में लगे हैं। विभिन्न उद्यमों की वेबसाईट आज द्वैभाषिक रूप में दृष्टिगोचर होती हैं। तकनीकी विकास की रीढ़ कही जाने वाली अंग्रेजी भाषा के साथ–साथ तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग इसकी उपयोगिता को सिद्ध करती है।

अखण्ड भारत को एक सूत्र में पिरोने वाली राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सशक्त बनायें और एक अतुलनीय भारत का निर्माण में योगदान करें। आशा है ''यज्ञ'' का यह अंक भी पहले की तरह पठनीय होगा और हम सबको हिंदी में काम करने की प्रेरणा देगा।

आप सभी को मेरी शुभकामनाएँ।

सतिंदर भाटिया

(प्रो. सतिंदर भाटिया)

सरंक्षक की कलम से...

नमस्कार,

संस्थान द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर के पाठ्यक्रमों के संचालन व अनुसंधान कार्यक्रमों के साथ–साथ अपने राष्ट्र धर्म के निर्वाह में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने के लिए किए जा रहे, प्रयास जैसे नियमित रूप से विभागीय/अनुभागों में कार्यरत्त कर्मचारियों द्वारा हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करना तथा प्रोत्साहन योजनाओं में बढ़–चढ़ कर भाग लेना, हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का संचालन व कर्मचारियों की सहभागिता, सेवाकालीन प्रशिक्षणों का संचालन, तिमाही हिंदी कार्यशालों का संचालन, संस्थान के समस्त अधिकारियो/कर्मचारियों के दैनिक हिंदी कार्य में सुविधा प्रदान करता है। हमें गर्व है, कि संस्थान राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए निरत्तर कार्य कर रहा है।

हम देश की गौरवशाली संस्कृति के संवर्धन और हिंदी भाषा के प्रयोग के प्रति अपनी भावनाओं को मज़बूत करें और राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत होकर यह प्रण करें, कि हिंदी को कार्यालयी एवं व्यावहारिक भाषा बनायेंगे और जन मानस में इसके प्रचार–प्रसार में भी सक्रिय भूमिका निभाएगें।

मंगलकामनाओं सहित,

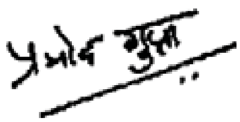

(डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता)
कुलसचिव

हिन्दी अनुभाग

संस्थान के लिए एक हिंदी पत्रिका छापने के विचार से ''यज्ञ'' पत्रिका की उत्पति हुई थी, स्वर्गीय श्री एस के वर्मा जी, पूर्व प्रा0 अधिकारी(हिंदी) के आर्थक प्रयास व दूरदृष्टि के परिणाम स्वरूप यज्ञ पत्रिका के प्रथम अंक का प्रकाशन वर्ष 2008 में किया गया, जोकि निरंतर प्रतिवर्ष नये आयाम लिख रही है और संस्थान के नये कर्मचारियों को हिंदी लेखन के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। आप अगर देखे तो जहाँ पहले के लेखको के लेख कम हो रहे है तो, वही उपरोक्त पत्रिका में नये लेखको ने अपना स्थान बनाना शुरू कर दिया हैं यह एक पत्रिका न हो कर एक परिवार के संगठित रूप में समाने आ रही है।

संस्थान के कर्मचारी हिंदी पखवाडा में होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में बडी ही तन्मयता से अपनी कलम का उपयोग करते देखे जाते है। संस्थान के सभी लोगों को चाहिए कि वे अपनी मातृभाषा और प्रमुख संपर्क भाषा हिंदी से निकटता बनाए रखें क्योंकि इन भाषाओं के जरिए ही आप अपनी संस्कृति को सजोकर रख सकते हैं।

यह अति हर्ष का विषय है की आज हम ''यज्ञ'' पत्रिका के अंक 15 का प्रकाशन कर रहें है। यह अंक इस बात की प्रमणिकता है की संस्थान राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए निरंतर प्रयासरत है।

यज्ञ, अंक 15 के प्रकाशन में संस्थान के सभी समस्त पदाअधिकारी के मार्गदर्शन और सहयोग के लिए हिंदी अनुभाग आप सभी का आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की यज्ञ पत्रिका के आगामि अंक के लिए भी आपका सहयोग प्राप्त होता रहेगा। सभी की मंगलकामनाएँ सहित।

''जय हिंद, जय भारत''

कमल सिंह
विर. सहायक
हिंदी अनुभाग

हमारी नागरी लिपी दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपी हैः

– राहुल सांकृत्यायन

विषय-सूची

अंक 15 | वर्ष 2023

प्रधान संरक्षक
प्रो. सतिंदर भाटिया
कुलपति

संरक्षक
डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता
कुलसचिव

संपादक मंडल
डॉ. आशीष पांडेय
डॉ. प्रतीक माहेश्वरी
डॉ. आशीष गुप्ता
श्री देशराज

सहयोग
समस्त
आई.आई.एफ.टी परिवार

प्रकाशक
हिंदी अनुभाग
भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
बी–21
कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया
नई दिल्ली–110 016

पत्रिका में प्रकाशित लेखों और रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं। हिंदी अनुभाग का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

क्र. सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	हिंदी दिवस 2023 के अवसर पर माननीय गृहमंत्री जी का संदेश		01
2.	कुलपति की कलम से		04
3.	संरक्षक की कलम से		05
4.	हिन्दी अनुभाग	कमल सिंह	06
5.	हमारे वित्तीय कल्याण के लिए वित्तीय योजना	डॉ. नीति नंदिनी चटनानी	09
6.	कामकाजी पेशेवरों के लिए एमबीए शिक्षण: पढ़ाएं नहीं; उन्हें सीखने दें!	डॉ. राजेंद्र प्रसाद शर्मा	11
7.	जिन्दगी मिल ही गयी दोबारा	देश राज	13
8.	पत्थरों से प्रेरणा: एक संघर्ष की कहानी	एस बालासुब्रमण्यम	15
9.	यह राष्ट्र रहना चाहिए	नीता पाण्डेय	17
10.	सत्याग्रह का संघर्ष	डॉ. ओली मिश्रा	17
11.	पत्नी के कार्यक्षेत्र में पति की भूमिका अहम	नलिनी मेशराम	18
12.	देखते ही देखते जवान माँ–बाप बूढ़े हो जाते हैं..	तनुश्री अरोरा	19
13.	मासूमियत	संजीव कुमार	20
14.	यात्रा वृतांत	संजय वर्मा	21
15.	भारत में बेरोजगारी निवारण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका	दिपांशु राय सक्सेना	23
16.	अहिंसा की सीमा	पीताम्बर बेहेरा	25
17.	''चिराग''	प्रीति वाजपेयी	27
18.	आधुनिक योग (हास्य कविता)	चंचल नवीन ठाकुर	27
19.	भक्त पुंडनाम की कथा	पी जी दीपा	28
20.	पतझड़	प्रज्ञा माथुर	29
21.	बीतते दिन	श्रेया मिश्रा	30
22.	छल	अतुल	31
23.	कभी कभी अब यूं लगता है।	राहुल पाठक	33

क्र. सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
24.	चाय को मना कौन करता है भई	सुमिता मरवाह	34
25.	आइये जानें डिजीलॉकर क्या है	राजीव दत्ता	35
26.	स्टार्टअप्स: देश और जनता के लिए एक संवर्धनशील विकल्प	मरियमा कुरियन	37
27.	प्रौद्योगिकी	अभिषेक	38
28.	एक उड़ान	शालु वशिष्ठ	39
29.	कार्यस्थल पर पेशेवर अंदाज	वैभव यादव	40
30.	शीर्षक: मोबाइल फोन की लत से संतुलित जीवन की ओर	नीरज कुमार	43
31.	मीठे बोल	सतपाल	45
32.	चित्रकला	लायशा ठाकुर, शिविका दुग्गल	46–47
33.	आईआईएफटी ने 60वां स्थापना दिवस मनाया		48
34.	हिंदी पखवाड़ा दिनांक 14 सितम्बर, 2023 से 29 सितम्बर, 2023		49
35.	कार्यशाला		51
36.	सेवानिवृत्ति 2023		52
37.	राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (3)3 के अंतर्गत अनिवार्य रुप से द्विभाषी जारी किए जाने वाले कागजात		53
38.	राजभाषा नियम, 1976		54
39.	झलकियाँ 2023		55

हमारे वित्तीय कल्याण के लिए वित्तीय योजना

डॉ. नीति नंदिनी चटनानी
प्रोफेसर (वित्त), आईआईएफटी
हैड (आई सी सी डी)

हम सभी अपनी भलाई के महत्व को समझते हैं। यह खुशहाली सिर्फ हमारे शारीरिक या भावनात्मक स्वास्थ्य से नहीं, बल्कि हमारे वित्तीय स्वास्थ्य से भी आती है। हमारा वित्तीय स्वास्थ्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम मौद्रिक मामले में कितने सहज हैं। क्या हम आज अपने जीवन के खर्चों को पूरा करने के लिए सुरक्षित रूप से तैयार हैं, और तब भी जब जीवन हमारे सामने एक कर्वबॉल फेंकता है? कभी–कभी, हमें नौकरी छूटने या अप्रत्याशित चिकित्सा व्यय का सामना करना पड़ सकता है। हमें यथार्थवादी होना चाहिए और इन खर्चों को कवर करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

वित्तीय सुरक्षा तब होती है जब हम कह सकें, ''हां, मैं अपने सभी अनुमानित और अप्रत्याशित खर्चों को पूरा करने के लिए पूरी तरह से तैयार हूं।'' हमें न केवल खर्चों से निपटने के लिए, बल्कि जीवन में आने वाले अवसरों का लाभ उठाने के लिए भी आर्थिक रूप से तैयार होने की आवश्यकता है। यह तैयारी अंततः हमारी वित्तीय योजना पर निर्भर करती है, जो हमें अपने वित्तीय लक्ष्य निर्धारित करने और उन्हें हासिल करने में मदद करती है। वित्तीय नियोजन हमें अपने वित्तीय संसाधनों का सबसे उचित उपयोग करने के लिए रणनीति बनाने में मदद करता है, ताकि हम अपने सभी खर्चों को पूरा कर सकें और अपने जीवन के सभी लक्ष्यों को पूरा कर सकें। यह हम में से प्रत्येक के लिए एक अपरिहार्य जीवन कौशल है, क्योंकि यह हमें अपनी वित्तीय भलाई के लिए सही निर्णय और कार्य करने में सक्षम बनाता है।

वित्तीय नियोजन के लिए सावधानीपूर्वक और संयमित सोच की आवश्यकता होती है। यह हमारे आगामी खर्चों की पहचान करने और अल्पावधि (अगले 1 वर्ष), मध्यम अवधि (अगले 1 से 5 वर्ष) और दीर्घकालिक (अगले 5 वर्षों से अधिक) के लिए हमारे वित्तीय लक्ष्य निर्धारित करने से शुरू होता है। तो, हममें से कितने लोगों ने सचेत रूप से अपने वित्तीय लक्ष्यों की पहचान की है? क्या हम आज उचित वित्तीय निर्णय ले रहे हैं जो हमारे भविष्य में हमारा समर्थन करेंगे?

वित्तीय नियोजन के लिए कुछ सुझाए गए तरीके हैंः

1. जल्दी शुरुआत करेंः इसके दो अलग–अलग फायदे हैं– (1) जितनी जल्दी हम अपनी वित्तीय योजना शुरू करते हैं, हमें अपने वित्तीय लक्ष्यों के लिए काम करने के लिए उतना ही अधिक समय मिलता है और (2) जल्दी शुरुआत करने से हमें चक्रवृद्धि का अधिकतम लाभ मिलता है।

2. वित्तीय रूप से जानकार बनेंः वित्तीय ज्ञान हमें उचित वित्तीय विकल्प चुनने की मानसिकता प्रदान करता है, जो हमारी वित्तीय सुरक्षा के लिए आधार बनता है।

3. वित्तीय लक्ष्य बनाएंः हमारे वित्तीय लक्ष्यों को जानना हमारी वित्तीय भलाई की दिशा में पहला कदम है। ये लक्ष्य हमें दिशा और उद्देश्य की भावना प्रदान करते हैं और हमें वित्तीय सफलता प्राप्त करने के रास्ते पर रखते हैं।

4. बचत और निवेशः बचत और निवेश साइकिल के दो पैंडल हैं जो हमें अपने वित्तीय लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर ले जाते हैं। साइकिल की सवारी के रूप में अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने की कल्पना करना सबसे अच्छा है, क्योंकि यह प्रक्रिया धीमी, जानबूझकर की जाएगी और हमारी ओर से बिना रुके प्रयास की आवश्यकता होगी।

5. समीक्षा करें और समायोजित करेंः साइकिल पर सवारी करते समय, हमें यह जांचने के लिए नियमित रूप से अपनी प्रगति पर नजर रखनी चाहिए कि हम सही रास्ते पर हैं या नहीं। जैसे–जैसे हमारे जीवन लक्ष्य विकसित

होते हैं, हमें अपनी योजनाओं को समायोजित करने की आवश्यकता हो सकती है। लेकिन हमें उन्हें हासिल करने के रास्ते पर बने रहना चाहिए।

आमतौर पर, हमारे वित्तीय लक्ष्य हमारे बच्चों के लिए शिक्षा के वित्तपोषण, हमारी सेवानिवृत्ति के लिए धन की बचत, कुछ सपनों की छुट्टियों पर जाने के लिए पर्याप्त धनराशि, घर खरीदने आदि के आसपास घूमते हैं। लक्ष्य जो भी हों, उन्हें औपचारिक रूप देना उन्हें साकार करने की दिशा में हमारा पहला कदम है। वित्तीय नियोजन हमारी वित्तीय भलाई का समर्थन करता है। लेकिन हमें शुरुआत करनी होगी और फिर आगे बढ़ना होगा। बेशक, आगे बढ़ने के रास्ते में सही निवेश विकल्प चुनना शामिल होगा, जो रिटर्न के साथ जोखिम को संतुलित करता है, और जो हमारे वित्तीय लक्ष्यों के साथ संरेखित होता है। वह हम बाद में उठाएंगे।

फिलहाल, आइए हम अपने वित्तीय भविष्य की योजना बनाने और इसे सुरक्षित बनाने का पहला कदम उठाएं। आइए हम अपने वर्तमान वित्तीय संदर्भ को समझकर अपनी यात्रा शुरू करें। आज हम कहां खड़े हैं, इसकी समझ हमारे जीवन लक्ष्यों को पहचानने और उन्हें प्रदान करने के लिए आवश्यक है। आइए इन चार सवालों के जवाब दें:

1. मेरे पास वर्तमान में कितनी पूंजी है और क्या यह सुरक्षित है? क्या मैं इसे ठीक से प्रबंधित कर रहा हूँ?
2. मैं हर महीने कितनी बचत कर सकता हूं, और मैं अपनी बचत को कैसे बरकरार रख सकता हूं?
3. मैं आने वाले वर्ष, अगले पांच वर्षों, दस वर्षों और उससे आगे के लिए अपने लिए कौन से वित्तीय लक्ष्य निर्धारित कर सकता हूं और मैं उन्हें कैसे पूरा कर सकता हूं?
4. कौन से वित्तीय उत्पाद और सेवाएँ मुझे अपने वित्तीय लक्ष्य हासिल करने में मदद करेंगी?

इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए हम अपने वित्तीय मामलों के बारे में सचेत हो जाएंगे, और यह वित्तीय कल्याण की हमारी यात्रा के लिए इष्टतम प्रारंभिक बिंदु होना चाहिए। अगले लेख में, हम अपने वित्तीय दृष्टिकोण और आदतों को अपने वित्तीय संदर्भ और लक्ष्यों के साथ संरेखित करने के बारे में सीखेंगे।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है:

– **सुमित्रानंदन पंत**

कामकाजी पेशेवरों के लिए एमबीए शिक्षणः पढ़ाएं नहीं; उन्हें सीखने दें!

डॉ. राजेंद्र प्रसाद शर्मा
प्रोफेसर एवं प्रमुख
प्रबंधन विकास कार्यक्रम

शिक्षण बनाम सीखना – सीखाना

प्रतिभागियों को पढ़ाना या व्याख्यान देना वमन करने के समान है। कामकाजी अधिकारी किसी के द्वारा पढ़ाए जाने के लिए नहीं बल्कि सीखने के लिए बी–स्कूल में शामिल होते हैं। हालाँकि सिखाया जाना एक निष्क्रिय गतिविधि है, सीखने की प्रक्रिया में प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता होती है। जबकि पाठ्यक्रम गुणवत्तापूर्ण सामग्री प्रदान करता है, शैक्षणिक विधि सीखने को सुनिश्चित करती है। जब शिक्षा के तरीकों में लगातार सुधार होता है, तो शिक्षा में सुधार होता है। इसमें शिक्षक और शिक्षार्थियों के बीच सार्थक बातचीत शामिल है। विभिन्न पृष्ठभूमियों से प्रतिभागियों को प्रवेश देने वाले बी–स्कूलों को सहक्रियात्मक शिक्षापद्धति के माध्यम से उनके ज्ञान एवं कौशल को बढ़ाने में मदद करनी चाहिए। मस्तिष्क एक पैराशूट की तरह है। यह तभी काम करता है जब यह खुला हो। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि प्रत्येक छात्र पढ़ा सकता है, और प्रत्येक शिक्षक सीख सकता है। इसलिए, बी–स्कूल प्रोफेसरों को एक शिक्षार्थी की मानसिकता के साथ कक्षा में आना चाहिए।

पेशेवरों की पूर्वावश्यकताएँ

एल्विन टॉफलर ने कहा है कि '21वीं सदी के निरक्षर वे नहीं हैं जो पढ़–लिख नहीं सकते, बल्कि वे हैं जो सीख नहीं सकते, एक बार सीखे हुए को भूल नहीं सकते और फिर दोबारा नया सीख नहीं सकते।' प्रबंध स्कूलों को प्रतिभागियों को अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक क्षेत्र में भविष्य की किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए तैयार करना चाहिए। अस्थिर, अनिश्चित, जटिल और अस्पष्टता भरी दुनिया में संकटों का प्रभावी ढंग से जवाब देने के लिए निर्णायक नेतृत्व की आवश्यकता है। अतः पेशेवरों को जटिल परिस्थितियों का विश्लेषण करने और नवीन समाधान विकसित करने के लिए तैयार करना चाहिए। कन्फ्यूशियस के अनुसार, "मैं सुनता हूँ उसे भूल जाता हूँ; जो मैं देखता हूं, वह मुझे याद है; और जो मैं करता हूं, उसे मैं समझता हूं।" अमेरिका के राष्ट्रपति बनने के बाद भी अब्राहम लिंकन ने एक पत्रकार से कहा था कि अगर उन्हें वापस स्कूल जाने का मौका मिले तो वह बोलने और लिखने में महारत हासिल करना चाहेंगे। अपनी पुस्तक, 'प्रबंधक, एमबीए नहीं' में, हेनरी मिंटज़बर्ग ने स्पष्ट किया है कि योग्यताओं के आधार पर लोगों को नियुक्त किया जाता है, न कि अकादमिक डिग्री के आधार पर। सही मानसिक दृष्टिकोण, कौशल और ज्ञान पेशेवर प्रबंधकों के लिए आवश्यक हैं, और बिल्कुल इसी क्रम में। कुछ करने या जानने से ज्यादा महत्वपूर्ण है कुछ बन पाना।

प्रतिभागी–केन्द्रित शिक्षण पद्धति

कामकाजी प्रतिभागी केस स्टडी और सिमुलेशन के साथ बेहतर ढंग से जुड़ते हैं। मामले के विश्लेषण सम्बंधित चर्चा विचार–मंथन के लिए महत्वपूर्ण सोच विकसित करती हैं और निर्णय लेने के लिए विशिष्ट मानदंडों पर विकल्पों का मूल्यांकन करती हैं। एक नए उत्पाद का मूल्य निर्धारण कैसे हो? या इसी तरह, सेवा विपणन पाठ्यक्रम में छात्रों से उनके कार्यकाल के दौरान उनके अनुभवों के आधार पर सेवा प्राप्ति के दौरान के दुख या जादू के क्षणों के रूप में वर्गीकृत उनकी विभिन्न सेवा मुठभेड़ों की एक डायरी बनाए रखने के लिए कह सकता है। बिक्री प्रबंधन पाठ्यक्रम में, बिक्री नेतृत्व कौशल के बिना पदोन्नति की इच्छा रखने वाले एक उत्कृष्ट विक्रेता का मामला एक रोमांचक ढंग से सीखने का अनुभव पैदा कर सकता है। प्रतिभागियों ने चर्चा की और महसूस किया कि असाधारण सेल्सपर्सन और सेल्स मैनेजरों को अलग–अलग पूर्वापेक्षाओं की आवश्यकता

होती है। एक अन्य मामले में, एक विक्रेता का किसी प्रतिस्पर्धी के हाथों व्यवसाय खोने के कारणों का विश्लेषण और पहचान करने में मदद मिलेगी। प्रोफेसरों को प्रतिभागियों से खुद को नायक की जगह पर रखकर स्टैंड लेने के लिए कहना चाहिए। सही या गलत निर्णय जैसा कुछ नहीं होता, केवल परिणाम होते हैं। कौशल का अभ्यास करने के लिए प्रतिभागियों की कौशल विकास आवश्यकताओं के लिए लाइव और पूर्व–रिकॉर्ड किए गए रोलप्ले उपयुक्त हैं। हालाँकि, शिक्षकों को रोलप्ले ब्रीफ विकसित करना होगा और विश्लेषण और भविष्य में उपयोग के लिए इसे रिकॉर्ड करना होगा। अनुभवात्मक अभ्यास प्रतिभागी–केंद्रित, खोजपूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करते हैं।

प्रश्नों की शक्ति

प्रश्न उत्तरों से अधिक शक्तिशाली होते हैं। जो प्रोफेसर कक्षा में प्रतिभागियों से प्रश्न पूछते हैं, वे अपने साथियों की तुलना में अधिक सक्षम होते हैं। अच्छे प्रश्न प्रतिभागियों को सोचने पर मजबूर करते हैं। प्राध्यापक प्रतिभागियों की वैचारिक समझ के बारे में जानकारी एकत्र कर सकते हैं, उनके साथ संबंध बना सकते हैं और एक–दूसरे से सीखने के लिए विश्वास का वातावरण बना सकते हैं। किसी को यदि कोई भ्रम हो तो उसे खत्म किया जा सकता है। अनुक्रमिक प्रश्नोत्तरी दृष्टिकोण प्रभावी शिक्षण को बढ़ावा देता है। विस्तृत प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए ओपन–एंडेड प्रश्न पूछने चाहिए और उसके बाद एक विराम की आवश्यकता होती है। जैसे, सेवा विपणन पाठ्यक्रम के शुरूआती व्याख्यान में ये प्रश्न पूछे जा सकते हैं: सेवाएँ उत्पादों से किस प्रकार भिन्न हैं? विपणन कैसे करेंगे क्योंकि सेवाएं अमूर्त हैं? अमूर्त वस्तुओं का उत्पादन कैसे करें? कुछ हाँ/नहीं प्रकार के प्रश्न प्रतिभागियों की सहभागिता का आकलन करने में मदद करेंगे। प्रतिभागी के दृष्टिकोण को संशोधित करने में मदद करने के लिए प्रोफेसर वांछित प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए ऐसे प्रश्न पूछ सकते हैं जिसमें प्रोफेसर वही सुनेगा जो वे विद्यार्थी से चाहते हैं। कुछ रिवर्स प्रश्न का उपयोग भी अच्छा होगा। उदाहरण के लिए, क्या कोई सबूत है? क्या कोई उत्तर देना चाहेगा?

निष्कर्ष

वर्षों के अनुभव के बाद, कामकाजी खुद को सिखाने के लिए नहीं बल्कि सीखने के लिए आते हैं। सभी भाषाओं की जननी संस्कृत इतनी समृद्ध है कि इसमें शिक्षकों की अद्वितीय क्षमताओं को पहचानने के लिए अलग–अलग शब्द हैं। जो शिक्षक केवल जानकारी साझा करता है वह 'अध्यापक' है। जो जानकारी को ज्ञान में परिवर्तित करता है वह 'उपाध्याय' है। एक 'आचार्य' कौशल प्रदान करता है, और एक 'पंडित' अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। जो सोचना सिखाते हैं वे 'दृष्टा' हैं, और जो ज्ञान जगाते हैं वे 'गुरु' हैं। महान शिक्षक जन्म से या पैदायशी नहीं होते; उन्हें शिक्षण कौशल में प्रशिक्षित किया जाता है।

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है:

– **कमलापति त्रिपाठी**

जिन्दगी मिल ही गयी दोबारा

देश राज
सेवानिवृत

आज से 4 साल पहले फरवरी 2020 के शुरू में कोरोना ने विश्व में दस्तक दे दी थी और मार्च में भारत में भी कोरोना ने विभिन्न देशों के साथ हाहाकार मचा दिया था। दुनिया में कोरोना एक नये प्रकार के वायरस से फैली बीमारी थी जिसकी कोई जानकारी डॉक्टर के पास उपलब्ध नहीं थी। अत्यंत खतरनाक और रहस्यमय वायरस जिसका संक्रमण बहुत तेजी से फैला लोगों की मौत का कारण बना। उस समय करोना के बारे में कोई भी जानकारी न होने के कारण अनेकों भ्रांतियां और दहशत फैल गई थी। सबको यही आशंका थी कि हम बच पाएंगे या नहीं या हमारा परिवार इसकी चपेट में तो नहीं आ जाएगा। इतना डरावना भयंकर मंजर सबके सामने था। दुनिया में हाहाकार मचा हुआ था, कि न जाने अब संसार में सबके जीवन का क्या होगा? यह घर मकान ऐसे ही रह जायेंगे क्या? पैसे इलाज में काम आयेंगे क्या नहीं? क्या विनाश नजदीक है? इन सभी घोर आशंकाओं से सभी घिरे थे।

सभी के दिमाग में रात दिन यही बात चलती रहती थी कि अपने और अपने परिवार को कोरोना संक्रमण से कैसे बचाया जा सके। खांसी, छींक, बुखार से मास्क बचाएगा और बार–बार सही ढंग से हाथ धोकर बचाव होगा। बार–बार सेनिटाइजर से हाथ साफ रखने है। भीड़ से दूर रहना है। लोगो से मिलना–जुलना बंद। जिस पैसे के पीछे सभी भागते हैं कोरोना के समय उसी पैसे को हाथ से पकड़ने में भी डर लगता था। नोट लेने से पहले सेनिटाइज करने पड़ते थे। डर लगता था सभी लोग अपने अपने घरों में कैद होकर रह गए। हर समय यह सुनने को मिलता था कि आज उसको कोरोना हो गया। उसे बिल्डिंग में कोरोना के मरीज ज्यादा हो गए। उसे गली में पुलिस ने बैरिकेडिंग कर सभी का आना–जाना बंद कर दिया। सड़कों पर एंबुलेंस की गाड़ियां और सायरन ही सुनाई देते थे। यह सब बातें सभी को विचलित करती थी लेकिन इसका कोई बचाव नहीं था किया तो क्या किया जाए? अफवाहों का बाजार गर्म था।

यदि हम पुरानी बातों को याद करें और सिलसिलेवार घटित घटनाओं को याद करें तो आज भी उस चुनौतीपूर्ण समय की याद आते ही हमारी रूह कांप उठती है। मुझे याद है की मार्च 2020 के शुरू में दिल्ली में अफवाह फैल गई थी की दिल्ली में प्रथम पाए गए कोरोना संक्रमित व्यक्तियों ने मेट्रो में सफर किया था। इसी दहशत से कहीं उनके संक्रमण किसी और को न लग जाए मेट्रो में सवारी की संख्या अचानक बहुत कम रह गई थी। अधिकतर लोग अपने घरों में चुप कर बैठ गए थे और और उन्होंने ऑफिस आना–जाना भी बंद कर दिया था। अब अधिक अफवाहें फैलने लगी। ऑफिस में भी आने वाले कर्मियों की संख्या कम हो गई थी। क्लासेज बंद हो गई थीं। होस्टल खाली करा लिया गया था।

संस्थान के कर्मचारियों को सुरक्षित रखने के लिए एक दिन हमारे कार्यालय में रजिस्ट्रार डॉ० प्रमोद गुप्ता जी ने हम सभी को सुबह सुबह विचार विमर्श के लिए बुलाया। एक तरफ कार्यालय को सुचारू रूप से चलने का सवाल था तो दूसरी ओर संस्थान से जुड़े कर्मचारियों के जीवन को सुरक्षित रखने का दायित्व था। उन्होंने सभी से उस चुनौतीपूर्ण समय में सरकारी निर्देशों का पालन करने के साथ–साथ अपने परिवार को सुरक्षित रखने तथा संकट की घड़ी में मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए अन्य सभी पड़ोसियों आसपास रहने वाले लोगों की हर संभव सहायता करने का भी अनुरोध किया। सरकारी आदेशों के अनुसार तुरंत ही सभी लोगों को घर भेज दिया गया। कार्यालय में हम 5 –10 लोग बचे रहे। एक दो दिन बाद पूरे देश में कर्फ्यू की घोषणा हो गई। संस्थान बंद कर दिया गया। वर्क फ्रॉम होम शुरू हो गया। हर रोज आदेशानुसार कोरोना से संक्रमित कर्मचारियों के बारे में कार्यालय आदेश जारी होने लगे। सभी ओर वीराना छा गया। दहशत का माहौल था। तरह–तरह की अफवाह फैल रही थी कि इतने लोग करोना

वायरस से संक्रमित पाए गए इतने लोगों की मृत्यु हो गई। कोई दवा या इलाज न होने के कारण जीवन अनिश्चित हो गया। पुलिस गलियों में घूमकर आदेशों का पालन करवाने लगी। सभी बाजार काम धंधे बंद हो गए। अफरातफरी मच गई। हर आदमी अपने घर को लौटने लगे। यातायात के सभी साधन बंद हो गए रेल बस जहाज सभी बंद हो गए। जो जहां था वहीं ठहर गया। सभी अपने को सुरक्षित करने के लिए घरों में कैद हो गए। लोग घरों में और पक्षी और जानवर उन्मुक्त हो विचरण करने लगे। शुद्ध प्राकृतिक वातावरण हो गया। लोगों के कामधंधे बंद होने से लोगों को मुश्किलों का सामना करना पड़ा। धार्मिक और सामाजिक संगठनों ने लोगों को खाने की देश भर में व्यवस्था की जो संकट को घड़ी में अनूठा प्रयास रहा। जिस किसी से जी भी बन पड़ा उसने यथासंभव दूसरों की मदद की। सरकार ने मुफ्त अनाज देकर भी लोगों की मदद की। थोड़े समय के बाद सरकार के प्रयासों से जीवन को एक नई दिशा मिली और मुफ्त वैक्सीन उपलब्ध करवाकर लोगों की जान बची। परंतु जब तक बहुत सारे लोगों ने अपने सगे संबंधियों और परिवारजनों को रिश्तेदारों मित्रों को खो दिया यह एक बड़ी दुखद स्थिति रही जिसकी त्रासदी आज भी लोग झेल रहे हैं।

खैर, बुरा वक्त बीत गया और जिंदगी फिर पुराने ढंग से वापस लौट आई है। लेकिन अब मुझे कोरोना काल में घटित कुछ अच्छी बातें बहुत याद आती है। सभी घर पर रहते थे हर घर परिवार में संबंधों में, यारी दोस्तों में अपनापन और सहायता करने की भावना एकदम जागृत हो गई थी। हर आदमी एक दूसरे की मदद के लिए हमेशा तैयार रहता था। धार्मिक सामाजिक संगठनों ने उदारता से सहायता करी। खूब खाना खिलाया और लगा सतयुग वापस आ गया है। हर परिवार में सभी हर रोज नए–नए व्यंजन बनाकर घरवालों को खिलाते थे क्योंकि सभी को अपना घर पर समय अच्छे से गुजरना था। त्याग और सेवाभाव वास्तव में दिखाई देता था। घर परिवार में प्रेम, मान, सम्मान और अपनेपन की भावनाएं एकदम बढ़ चुकी थी। सभी लोग प्राय एक दूसरे का हाल जानकर एक दूसरे का हौसला बढ़ाते थे। पारिवारिक संबंध अत्यधिक मधुर हो गए थे। सभी क्लेश, कटुता और दुर्भावनाएं समाप्त हो गई थीं। सभी एक दूसरे की चिंता करते थे और हर प्रकार की मदद के लिए तत्पर दिखाई देते थे। मानवीय व्यवहार बदल गया था। जैसे सभी को गीता का ज्ञान हो गया हो। प्रकृति में यकायक बदलाव आ गया। वातावरण शुद्ध हो गया था। प्रदूषण समाप्त। पक्षी और जानवर उन्मुक्त हो विचरण करने लगे थे। सारी प्रकृति महक से सराबोर हो गई थी। भौतिकवाद युग में सभी को मोहमाया से प्रेम खत्म हो गया था। सब दूर होते जा रहे थे ऐसा लग रहा था की जीवन में धन दौलत का कोई महत्व नहीं है। हर आदमी समर्पण और त्याग के लिए तत्पर दिखाई देता था। लेकिन आज कोरोना गुजर जाने के बाद सामान्य जीवन वापस लौट आया है। झूठ और फरेब भरी जिंदगी में भी लौट आया है। शत्रुता और आक्रोश अब फिर दिखाई देता है। अब पैसा ही जिंदगी में बड़ी चीज हो गया है। पारिवारिक संबंध खत्म होते जा रहे हैं। व्यवहार में मधुरता गायब हो गई है। आपसी मान सम्मान कम हो गया है। वही जिंदगी में भाग दौड़ शुरू हो गई है। प्रदूषित वातावरण ने जीना दुभर कर दिया है। खासकर दिल्ली और महानगरों में। संकट की दौर से हमने कुछ नहीं सीखा। सिर्फ दिखावा भरी जिंदगी जी। परमात्मा ने तो हम सभी को जिंदगी दे दी दुबारा पर हमने अपना आचरण और व्यवहार अपना लिया पुराने वाला!!!!

पत्थरों से प्रेरणाः एक संघर्ष की कहानी

एस बालासुब्रमण्यम
सहायक सिस्टम प्रबंधक

''मत जाना, वरना मरोगे।''

एक शांत, सामान्य दिन, जब मैं और मेरे बीस सहपाठी, जिनकी उम्र 12 से 14 वर्ष के बीच थी, एक बस में यात्रा कर रहे थे, अचानक हमारी बस पर पत्थर फेंके जाने लगे। एक पत्थर ने मेरे गाल को मुश्किल से छुआ, जिससे मुझे डर और असमंजस का अनुभव हुआ। ऐसे में, मैं सोचने लगा कि आखिर क्यों कोई हमारी बस पर पत्थर बरसा रहा है? आगे क्या होगा?

मैं तमिलनाडु में एक निम्न मध्यम वर्गीय परिवार में पला–बढ़ा, जहाँ मैंने एक सरकारी स्कूल में अध्ययन किया। वहाँ हिंदी पढ़ाई नहीं जाती थी। वास्तव में, कई लोग राजनीतिक कारणों से हिंदी सीखने से हिचकिचाते थे।

जब मैं 8वीं कक्षा में था, तब ''मैंने प्यार किया'' हिंदी फिल्म दक्षिण भारत में लोकप्रिय हो गई, जिसके गाने मेरे पसंदीदा गायक ने गाए थे। गानों के अर्थ न समझते हुए भी, मैं उन्हें गाना पसंद करता था। उस दौरान, मैं भी अपनी एक सहपाठी को मात देने की कोशिश में था, जो लगातार तीन बार हमारी कक्षा में पहली रैंक पर रह चुकी थी। मैं पहले टॉपर था, लेकिन लगता है उसने मेरी ट्रॉफी पर अपना नाम गुदवा लिया था, और मैं वापस से उस नंबर वन की गद्दी पर बैठने की जुगत में लग गया था। वह हिंदी पढ़ाई के लिए एक प्राइवेट ट्यूशन में भी जा रही थी, जिसने मुझे भी हिंदी सीखने के लिए प्रेरित किया।

उस फिल्म ''मैंने प्यार किया'' और मेरी सहपाठी से आगे निकलने की चाह ने मुझे हिंदी सीखने के लिए प्रेरित किया। ट्यूशन की फीस महीने का 30 रुपए थी, और परीक्षा शुल्क 100 रुपए था। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा वर्ष में दो बार परीक्षाएँ आयोजित करती थी, जिसमें प्राथमिक से प्रवीण तक आठ स्तर शामिल थे। कुछ मनाने के बाद, मैंने अपनी माँ को मेरे साथ हिंदी ट्यूशन में भेजने के लिए राजी कर लिया। मैंने ''आजा शाम होने आई'' गाने के बोल समझना शुरू कर दिया, हालांकि इसके रोमांटिक अर्थों को नहीं समझ पाया। विशेष रूप से, जिस तरह से वह शरारती गायक अपनी मुस्कान के साथ गाता है (इसीलिए ''मैंने उसको प्यार किया''!) ''हाँ हाँ मेरा जादू चल गया, तेरा चेहरा खिल गया''।

जब हम पहली हिंदी परीक्षा के लिए निकले, तो एक अनपेक्षित मोड़ आया। हमारी बस को हिंदी विरोधियों ने घेर लिया, और वे पत्थरों की बौछार करने लगे। उनकी चेतावनी की गूंज हमें स्पष्ट सुनाई दे रही थी – ''हिंदी की परीक्षा मत दो!'' बस चालक ने जल्दी से दरवाजे और खिड़कियां बंद कर दी, मगर तब तक एक पत्थर ने मुझे निशाना बना लिया था, मेरे गाल को छूते हुए चोटिल कर दिया। चालक ने अस्पताल चलने की सलाह दी, पर मेरे अंदर की जिद ने मुझे उस परीक्षा हॉल की ओर धकेला। ''नहीं, मैं परीक्षा दूंगा!'' मेरी जिद ने मुझे साहसी बना दिया। उस घटना के पश्चात्, मेरे हिंदी शिक्षक की सहानुभूति और समर्थन, साथ ही मेरे कक्षा टॉपर से मिली प्रतिस्पर्धा ने मुझे अभूतपूर्व ढंग से बल दिया।

इस घटना ने, मेरे पसंदीदा गायक के गाने और मेरी कक्षा की प्रतिद्वंद्वी के साथ मेरी प्रतिस्पर्धा की वजह से मुझमें उत्साह भर दिया। इसने मुझे न केवल हिंदी में उसे पछाड़ने की प्रेरणा दी, बल्कि इसके बाद मैंने अपनी कक्षा में हमेशा पहला स्थान प्राप्त किया और दसवीं की सार्वजनिक परीक्षा में जिले में भी शीर्ष स्थान हासिल किया।

इस पूरी यात्रा से मुझे तीन बड़ी बातें सीखने को मिलीं। पहली, मुश्किल समय में भी अगर हम डटे रहें और हार न मानें, तो जीत हमारी हो सकती है। दूसरी, कभी–कभार, किसी और से आगे निकलने की चाह हमें और भी अच्छा करने की प्रेरणा दे सकती है। और तीसरी बात, अगर हमने ठान लिया कि हमें कुछ करना है, तो कोई भी चुनौती हमें रोक नहीं सकती। ये सीखें केवल कहानियों के लिए ही नहीं हैं, बल्कि ये हमारे जीवन के अंधेरे समय में भी उम्मीद

की किरण हो सकती हैं, ये दिखाते हुए कि साहस और दृढ़ संकल्प से हम किसी भी बाधा को पार कर सकते हैं।

अरे वाह! आपने तो हमारी कहानी पढ़ ली, लेकिन रुकिए, कहानी यहीं खत्म नहीं होती। अगर आपको लगता है कि ''पत्थरों से प्रेरणा'' केवल एक शुरुआत थी, तो आइए हमारी इस यात्रा को और भी मजेदार बनाएं। अगर आपके मन में कुछ सवाल उमड़–घुमड़ रहे हैं या आपके पास वो 'पत्थर' हैं जो मेरी 'गुल्लक' को भर सकते हैं, तो कृपया उनका निशाना bala@iift.edu पर लगायें। आपके हर एक 'पत्थर' का मैं स्वागत करूँगा, बिलकुल उसी तरह जैसे उन पत्थरों ने मुझे मेरे सफर में आगे बढ़ने में मदद की। आइए, हमारी इस 'पत्थर–से–प्रेरणा' की यात्रा को आपके विचारों के रंगीन पत्थरों से सजाते हैं!

हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं हैं।

– मौलाना हसरत मोहानी

यह राष्ट्र रहना चाहिए

नीता पाण्डेय
टी जी टी हिंदी
मैक्सफोर्ट स्कूल रोहिणी
(पत्नी प्रो. आशीष पांडेय, अनुसंधान प्रमुख)

हर आँख में, हर साँस में यह विश्वास रहना चाहिए
हम रहें या न रहें, यह राष्ट्र रहना चाहिए

रंग–धर्म–जाति का भेद चाहे कितना भी हो
तेरा–मेरा–इसका–उसका, द्वेष चाहे जितना ही हो
हर आपदा–विपदा में छिपा संदेश रहना चाहिए
हम रहें या न रहें.........

दोस्ती–दुश्मनी का षडयंत्र चाहे चलता रहे
भीतरी आघातों से जिस्म चाहे छिलता रहे
ऊँचे शैल शिखरों का पर वो ताज रहना चाहिए
हम रहें या न रहें,..........

आशा–निराशा में डूबा, वक्त चाहे कैसा भी हो
कुछ पाने–कुछ खोने का, द्वंद्व चाहे जैसा भी हो
विचारों में ऊँचा उठने का संकल्प होना चाहिए
हम रहें या न रहें,......

सत्याग्रह का संघर्ष

डॉ. ओली मिश्रा
असिस्टेंट प्रोफेसर, काकीनाड़ा

अहिंसा परम धर्म था, महात्मा गांधी जी का संदेश,
विदेशी आक्रमण के खिलाफ, उनका था यह आदेश।

सत्याग्रह के माध्यम से, वे लड़े अटली बाज,
हिम्मत से बढ़ कर, किया निर्माण स्वतंत्रता का राज।

चरणों में धूप, हाथों में किल, चलते गांधी जी,
अंधकार में प्रकाश बने, वे थे सत्य के नवीन दीप।

विश्व में उनकी अमरता, रहेगी सदा सजीव,
भारत माता के सपूत थे, जो लाए विजय का संगीत।

साकार किया अहिंसा का महत्व, हर जीव के लिए,
गांधी जी के संदेश ने, जग में बढ़ाया शांति का दीप।

नमन है उनको, जिन्होंने जीवन को समर्पित किया,
अहिंसा के मार्ग पर, हमें चलना सिखाया।

पत्नी के कार्यक्षेत्र में पति की भूमिका अहम

नलिनी मेशराम
असिस्टेंट रैजिस्ट्रार,
ई एवं एम सेक्शन

जिस प्रकार आज तक एक पत्नी अपने पति के कैरियर के लिए
अपना पूरा जीवन समर्पण करती आई है
उसी प्रकार पति की भूमिका
जब पत्नी की करियर को आकांक्षित दर्जा प्राप्त हो,
तब पति का होना भी उस उत्साह में विशेष भूमिका बनता है।

वह साथी बनकर, सहारा देता है,
प्रेरणा और समर्थन से उसको प्रेरित करता है।

जिस तरह सूरज की किरणें पौधों को जीवनदाता के रूप में बढ़ावा देती हैं,
उसी प्रकार पति की मुख्य भूमिका है अपनी पत्नी को उज्जवल भविष्य की ओर ले जाना।

संघर्षों में साथ खड़ा होकर,
मिलकर पीछे हटने का सोचने की स्थिति से दूर करता है।

पति की भूमिका न केवल साथी होती है,
बल्कि वह एक साथी, मित्र और प्रेरणास्रोत भी होता है।

जब पति और पत्नी मिलकर एक साथ काम करते हैं,
तो किसी भी मुश्किल का सामना करना आसान हो जाता है।

इस प्रकार, पति की भूमिका उसकी पत्नी की करियर में महत्वपूर्ण होती है,
जो उसे सफलता की ऊंचाइयों तक पहुंचाने में सहायक साबित होती है।

मै अपने कैरियर की सफलता का श्रेय अपने परिवार के साथ अपने जीवनसाथी को अर्पण करना चाहती हूँ।

हमारे भारत देश की उन्नति के लिए पति के साथ पत्नी का भी कार्यक्षेत्र में पूरा योगदान होना चाहिए
तभी हमारा परिवार और समाज एक नए भारत को ऊंची उड़ान देगा।

देखते ही देखते जवान माँ-बाप बूढ़े हो जाते हैं..

तनुश्री अरोरा
सहायक अनुभाग अधिकारी

सुबह की सैर में कभी चक्कर खा जाते है...

सारे मौहल्ले को पता है... पर हमसे छुपाते है

दिन प्रतिदिन अपनी खुराक घटाते हैं और

तबियत ठीक होने की बात फोन पे बताते है.

ढीली हो गए कपड़ों को टाइट करवाते है,

देखते ही देखते जवान माँ–बाप बूढ़े हो जाते हैं...

किसी के देहांत की खबर सुन कर घबराते है,
और अपने परहेजों की संख्या बढ़ाते है,
हमारे मोटापे पे हिदायतों के ढेर लगाते है,
''रोज की वर्जिश'' के फायदे गिनाते है.
'तंदुरुस्ती हजार नियामत ''हर दफे बताते है,
देखते ही देखते जवान माँ–बाप बूढ़े हो जाते हैं...

हर साल बड़े शौक से अपने बैंक जाते है,
अपने जिन्दा होने का सबूत देकर हर्षाते है,
जरा सी बढ़ी पेंशन पर फूले नहीं समाते है,
और FIXED DEPOSIT रिन्ऊ करते जाते है,
खुद के लिए नहीं हमारे लिए ही बचाते है.
देखते ही देखते जवान माँ–बाप बूढ़े हो जाते हैं...

चीजें रख के अब अक्सर भूल जाते है,
फिर उन्हें ढूँढने में सारा घर सर पे उठाते है,
और एक दूसरे को बात–बात में हड़काते है,
पर एक दूजे से अलग भी नहीं रह पाते है.
एक ही किस्से को बार–बार दोहराते है,
देखते ही देखते जवान माँ–बाप बूढ़े हो जाते हैं..

चश्में से भी अब ठीक से नहीं देख पाते है,
बीमारी में दवा लेने में नखरे दिखाते है,
एलोपैथी के बहुत सारे साइड इफेक्ट बताते है,
और होमियोपैथी/आयुर्वेदिक की ही रट लगाते है,
जरूरी ऑपरेशन को भी और आगे टलवाते है.
देखते ही देखते जवान माँ–बाप बूढ़े हो जाते हैं...

उड़द की दाल अब नहीं पचा पाते है,
लौकी तुरई और धुली मूंगदाल ही अधिकतर खाते है,
दांतों में अटके खाने को तिली से खुजलाते हैं,
पर डेंटिस्ट के पास जाने से कतराते हैं,
''काम चल तो रहा है'' की ही धुन लगाते है.
देखते ही देखते जवान माँ–बाप बूढ़े हो जाते हैं...

हर त्यौहार पर हमारे आने की बाट देखते है,
अपने पुराने घर को नई दुल्हन सा चमकाते है,
हमारी पसंदीदा चीजों के ढेर लगाते है,
हर छोटी बड़ी फरमाईश पूरी करने के लिए माँ रसोई और पापा बाजार दौड़े चले जाते है,
पोते–पोतियों से मिलने को कितने आंसू टपकाते है,
देखते ही देखते जवान माँ–बाप बूढ़े हो जाते है...
देखते ही देखते जवान माँ–बाप बूढ़े हो जाते है...

मासूमियत

संजीव कुमार
वरिष्ठ सहायक

एक सत्य घटना के रहस्योद्घाटन व उसका चित्रण आज भी मेरे मानस पटल पर सजीव है। जब भी इस घटना को याद करता हूँ, एक अबोध बालक की मासूमियत और परिस्थिति से सामना करने का उसका परिप्रेक्ष्य मेरे लिए वस्तुतः शोध का विषय था।

यह घटना कोविड–19 समय की है जब समाज में चारों तरफ नकारात्मक भाव बलवती था, थोड़े बहुत रियायत के बाद हमारा समाज धीरे–धीरे समान्य होने के रास्ते पर अग्रसर था। इसी प्रक्रम में प्रातःकाल मेरा भी मित्रों को साथ नजदीकी पार्क में जाना हो जाया करता था। प्रातःकाल वातावरण साधारणतया स्वच्छ होता था, परन्तु लोगों के अंदर इतनी ज्यादा डर थी की रियायत मिलने के बाद भी वे घरों से मुश्किल ही निकल पाते थे।

रोज की तरह हमलोग पार्क में घूम रहे थे तब हमारी नजर एक रोते हुए, मासूम, असहाय बच्चे पर पड़ी। बच्चे की उम्र तकरीबन 6–7 साल रही होगी और वह लगातार रोये जा रहा था। हमलोग ने सोचा की उस बच्चे के पास जाकर हमें उसके रोने के कारण का पता लगाना चाहिए, अतएव, हमलोग उसके पास गये और उस बच्चे से पूछा। पहले तो वो हमें देख के घबरा सा गया फिर धीरे–धीरे हमारे निरंतर प्रयास से हमने उसके मनोबल को इस तरह बढ़ाया की वो हमसे बात करने के लिए प्रेरित हो गया।

ऐसा प्रक्रम मेरे लिए बिल्कुल नया था अतः मैनें अपनी पूरी मानसिक स्थिति उस बच्चे के व्यवहार पर ही केंद्रित रखा। उसका हाव–भाव, उसका रोते–रोते शब्दों का उच्चारण करना मेरे लिए उत्सुकता का विषय था। बच्चे से बातचित करने के बाद यह पता चला कि वह अपने पापा के साथ पार्क में आया था और उसके पापा ने उससे यह कहा कि तुम यहीं ठहरो मैं थोड़े देर में आता हूँ। पर उस बच्चे से इंतजार किया नहीं गया और वह रोने–बिलखने लगा और इसी दौरान हमलोग उससे मिले।

उस रोते हुए बच्चे से जब हमलोग मिले तो वह यही कह रहा था कि मुझे पापा के पास जाना है, मुझे अपने घर जाना है। इसपर हमसब ने उससे पूछा "तुम्हारा घर कहाँ है", वह अपने घर का पता ठीक से नहीं बता पा रहा था, इस परिस्थति में हमलोग भी पूरी भ्रमित थे कि इस बच्चे को कहाँ ले जायें। इसपर हममे से किसी ने उस बच्चे से पूछा कि "बेटा तुम्हें तुम्हारे पापा का मोबाईल नम्बर याद है क्या, बताओ हम अभी तुम्हारे पापा को बुला देते हैं," इस पर वह बच्चा बड़े ही उत्साह से बोला "हाँ याद है न"। मेरे पापा का मोबाईल नम्बर है– 9234... यह सुनकर मेरे दोस्त ने पूछा "आगे का नम्बर बताओ बेटा ये तो पूरा नम्बर नहीं है", इतने में वह बच्चा फिर से रोने लगा और बोला "इतने ही नम्बर डायल करने पर 'पापा' लिख के आ जाता है, आप फोन में देखो, आ रहा होगा"। यह सुनकर हमलोग इस बच्चे की मासूमियत पर हैरान थे और हैरानी भरे स्वर में ही बच्चे से हमलोगों ने बोला "बेटा जिस फोन में नम्बर सेव होता है उसमें ही ऐसा होता है, सभी फोनों में ऐसा नहीं होता है", यह सुनकर बच्चा और तेज से रोने लगा, ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो उसका घर जाने का सपना ही टूट गया हो। इतने में कहीं दूर से उस बच्चे के पापा दिखाई दिये और वह बच्चा तेज से भागकर उनमें लिपट गया।

यह प्रसंग हम सब मित्रों में बहुत दिनों तक चर्चा का विषय था, हमलोगों की बातों के मूल में बस यही विषय होता था, पहले लोग महत्वपूर्ण फोन नम्बर को याद रखते थे, मोबाईल के आने से मानव मात्र की यह विशेषता जाती रही है, जैसे इस बच्चे की याद रखने की विशेषता। अधूरे नम्बर से वह अपने पिता को फोन मिलाने की कोशिश कर रह था। उस बच्चे की मासूमियत और उसका आत्मविश्वास दोनो वस्तुतः हमलोगों के समझ से हटकर था। उस बच्चे का स्मरण आज भी हमें जिन्दगी को एक अगल नजरिये से देखने को मजबूर करता है।

यात्रा वृतांत

संजय वर्मा
निजी सहायक

उत्तराखंड में स्थित पंचकेदार में से एक मदमहेश्वर या फिर कहें मध्यमहेश्वर की पूजा का बहुत ज्यादा महत्व माना गया है। पंच केदार में इसे दूसरे केदार के रूप में पूजा जाता है। देवों के देव महादेव का यह मंदिर उत्तराखंड के प्रमुख शिव मंदिरों में से एक है, जिसकी हिंदू धर्म में बहुत ज्यादा मान्यता है क्योंकि यहां पर भगवान शिव के बैल स्वरूप की नाभि की पूजा का विधान है। मान्यता है कि इस मंदिर को महाभारतकाल में पांडवों द्वारा बनवाया गया था।

बाबा भोलेनाथ की कृपा से मुझे अपने परिवार के

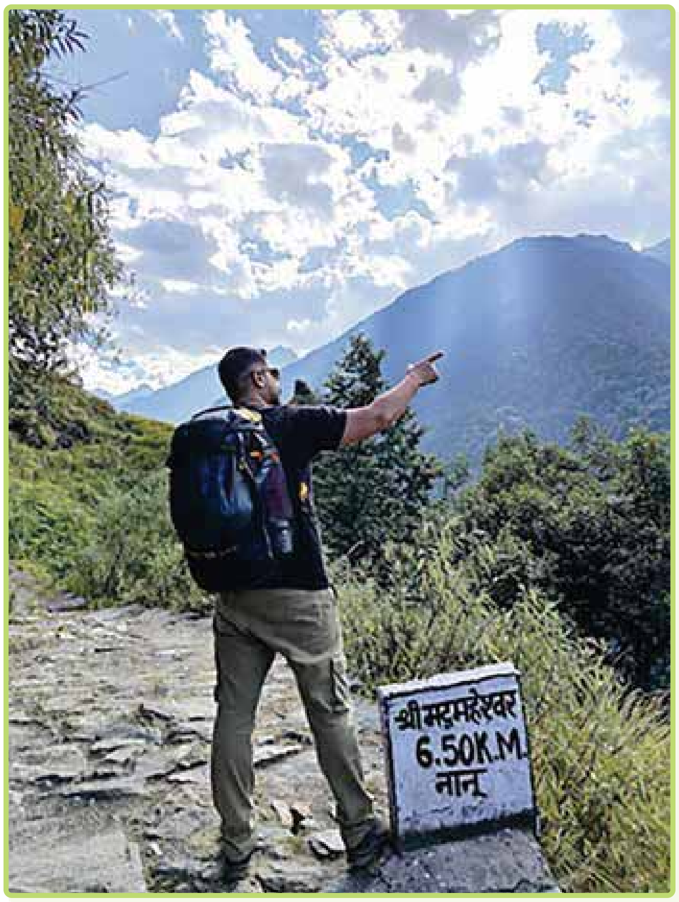

साथ अक्तूबर, 2023 के पहले सप्ताह में द्वितीय केदार श्री मध्यमहेश्वर के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह सफर हमने अपनी गाड़ी से सुबह–सुबह दिल्ली से शुरू किया था। दिल्ली से हम लोग पहले ऋषिकेश पहुचे और उसके बाद वहां से देवप्रयाग। देवप्रयाग पंच प्रयाग में से एक है और यहाँ अलकनन्दा नदी का भागीरथी नदी से संगम होता है। इस संगम के आगे यह संयुक्त नदी गंगा कहलाती है। धार्मिक दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण हिन्दू तीर्थस्थान है। देवप्रयाग से हम लोग दोपहर ढलने तक उखीमठ पहुचें। उखीमठ उत्तराखंड राज्य के रुद्रप्रयाग जिले में स्थित एक तीर्थ स्थल है। यह 1311 मीटर की ऊंचाई पर है और रुद्रप्रयाग से 41 किलोमीटर की दूरी पर है। सर्दियों के दौरान, केदारनाथ मंदिर और मध्यमहेश्वर से मूर्तियों (डोली) को उखीमठ रखा जाता है और छह माह तक उखीमठ में इनकी पूजा की जाती है। उखीमठ तक रास्ता अच्छा है और सफर में कोई कठिनाई नहीं हुई।

मध्यमहेश्वर मंदिर की यात्रा रांसी गांव से प्रारंभ होती है, जो कि उखीमठ से 20 किमी की दूरी पर है। रांसी से यह मंदिर करीब 15 –16 किमी है। उखीमठ से रांसी का रास्ता इतना अच्छा नही है। पहली रात को हम रांसी गाँव में होमस्टे में रुके और अगले दिन रांसी गाँव से आगे का सफर शुरू किया। शुरू के 5 किमी का रास्ता गौंडर गांव तक सुगम है जिसमे थोड़ी चढ़ाई है और बाकी रास्ता ढलान और सीधा है। रास्ते में आपके साथ–साथ चलती है मध्यमहेश्वर गंगा। गौंडर में अच्छे होमस्टे और बिल्कुल घर जैसे भोजन की उचित व्यवस्था है। यहाँ से तीन किमी ऊपर खड्डरा जगह है जो कि हमारा यात्रा का पहला पड़ाव था। होमस्टे में सारी मूलभूत सुविधाएं है और बिल्कुल देसी गांव वाला ताजा खान–पान है। सारी सब्जियां बिल्कुल फ्रेश और आर्गेनिक। रहना और खाना इतनी ऊंचाई पर होने के बावजूद बिलकुल उचित दाम पर उपलब्ध था। होमस्टे का किराया था प्रति व्यक्ति 600 रूपए और खाने कि भरपेट थाली (रोटी, दाल, सब्जी, चावल) 120 रूपए में।

यात्रा के दौरान बहुत ही खूबसूरत और विहंगम दृश्य देखने को मिले जो कि मन को प्रसन्न करने वाले थे।

खड्डुरा के बाद यात्रा थोड़ी मुश्किल शुरू हो जाती है। जैसे जैसे आप आगे बढ़ते हो चढाई और दुर्गम हो जाती है और आखरी के चार किमी आपकी असली परीक्षा लेते है। फिर बस 200 मीटर दूर जब मंदिर आता है तो रास्ता बिल्कुल सीधा हो जाता और आप घाटी में बने श्री मध्यमहेश्वर के दर्शन जैसे ही करते हो सब थकान मिट जाती है और एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। मंदिर के आसपास बहुत से होमस्टे उपलब्ध है जिसमे आपको साफ और ताजा भोजन और साफ रहने की व्यवस्था मिल जाएगी। मंदिर में शाम की आरती 6.15 बजे होती है जो कि मन को बहुत शांति प्रदान करती है। आरती के बाद आप दर्शन कर सकते है। मंदिर सुबह कुछ देर के लिए सुबह 7 बजे खुलता है और फिर बाद में सुबह 9 बजे दर्शन के लिए। मंदिर से करीब 1–2 किमी उप्पर बूढ़ा मध्यमहेश्वर है और यहाँ से हिमालय पर्वत के बहुत बढ़िया नजारे दिखते है यह से चौखम्बा पर्वत बहुत अच्छे से दिखता है। यहा से सूर्योदय और सूर्यास्त का नजारा बहुत अद्भुत होता है परंतु मौसम खराब और समय का आभाव होने के कारण हम यहा नही जा सके। यात्रा के दौरान दिन में मौसम कभी धुप और कभी छांव वाला रहा तथा रात में अच्छी खासी सर्दी रही। यहा के सभी निवासी बहुत ही अच्छे और सरल सभव के है तथा यात्रियों के साथ अतिथि देवो भवः वाला व्यवहार करते है। श्री मध्यमहेश्वर की यात्रा बहुत सुखद और यादगार रही।

भारत में बेरोजगारी निवारण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका

दिपांशु राय सक्सेना
संपादकीय सहायक

भारत के साथ–साथ पूरा विश्व आज बेरोजगारी जैसी समस्या से जूझ रहा है और आज के समय में बेरोजगारी पूरे विश्व की सबसे बड़ी सामाजिक–आर्थिक समस्याओं में से एक है। भारत और पूरे विश्व में इस समय करोड़ों लोग बेरोजगारी का सामना कर रहे हैं। प्रत्येक वर्ग के लोग बेहतर अवसरों की तलाश में गाँव, प्रदेश अथवा देश से पलायन करते रहते हैं और ऐसे पलायन के फलस्वरूप उनका शोषण किये जाने का संकट बना रहता है। बेरोजगारी की अधिकता राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की प्रगति को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है और बेरोजगारी ही एक ऐसा तथ्य है जो निर्धनता को जन्म देती हैं जिसके उपरांत बेरोजगारी खत्म होने तक निर्धनता व बेरोजगारी का यह दुश्चक्र सदा चलता रहता है।

शिक्षा और सही दिशा का ना होना भारत के युवाओं में बेरोजगारी का मूल कारण हो सकता है क्योंकि भारत के जायदातर युवा अशिक्षित होने के साथ–साथ उनमें रोजगारपरक कौशल की कमी है। जिसके कारण सामाजिक–आर्थिक समस्या हमेशा बनी रहती है। बेरोजगारी व निर्धनता के निवारण का सबसे सशक्त माध्यम शिक्षा ही है। शिक्षा की भूमिका बेरोजगारी दूर करने के लिए अतुलनीय है। यदि भारत में शिक्षा तंत्र को जड़ से लेकर उच्चतम स्तर तक सशक्त बना दिया जाए तो बेरोजगारी की समस्या का हल ढूँढना बेहद आसान हो जाएगा और साथ ही भारत का युवा निर्धनता के पैमाने को पार करना शुरू करते हुए अपना एक मुकाम हासिल करना शुरू कर देगा।

प्राचीन काल में मनुष्य का शिक्षा सीखने का स्रोत्र प्रकृति, परिवेश और अपने अनुभवों तथा जीवन के संघर्षों के माध्यम से था और अपने गुरुजनो द्वारा दिए गए दिशानिर्देशों का पालन करता था या ऐसा कहे की अपने आप को मजबूत करने और निर्धनता को दूर करने के लिए उस समय शिष्टाचार एक शिक्षित व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण कड़ी होती थी। जब शिक्षा को देशव्यापक और संस्थानीकरण किया जाने लगा तो शिक्षा को ग्रहण करने के लिए भेदभाव की परिभाषा की भी शुरुवात होने लगी। जबकि शिक्षा एक ऐसा श्रोत था जिसे सभी वर्ग के लोगो को समान रूप से प्रदान किया जाना चाहिए थी। लेकिन उसे ग्रहण करना व्यक्ति विशेष की मानसिक क्षमता पर निर्भर करने लगा। इससे सबकी योग्यताओं में भिन्नता आने लगी एवं ऐसे लोगों की संख्या में वृद्धि होने लगी जहाँ शिक्षा के क्षेत्र में भेदभाव शुरू होने लगा और अच्छा व्यक्ति अपने प्रभाव से अच्छे संस्थान से शिक्षा ग्रहण करने लगा तथा बाकि सामान्य रूप से शिक्षा ग्रहण करने लगे। और एक समय ऐसा आया जहाँ गरीब के लिए शिक्षा ग्रहण करना असंभव सा होने लगा जिससे आगे चलकर उन्हें अपनी योग्यता अनुरूप कार्य नहीं मिला तो वे बेरोजगार की श्रेणी में शामिल होते गए। वर्तमान समय में शिक्षा का स्तर सभी वर्गों के लोगो के लिए समान है उसके बावजूद शिक्षा ग्रहण करने में भिन्नता है जिसके आधार पर रोजगार तय होता है इसलिये शिक्षा प्राप्त करने भर से रोजगार मिलना जरूरी नहीं है। बेरोजगारी एवं शिक्षा को दो भिन्न प्रकार से देखने की आवश्यकता है। बेरोजगारी की समस्या का वास्तविक हल रोजगार सृजन में ही निहित है।

भारत सरकार द्वारा हर क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की रोजगार योजनाएं स्थापित की जा रही है उनमे से एक 'प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना' है जिसके तहत युवाओं में कौशल निर्माण के उद्देश्य से जगह–जगह कौशल विकास केंद्रों की स्थापना की गई है। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के माध्यम से हर क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षणों द्वारा युवाओं के कौशल का विकास किया जाता है। इसी के साथ स्टार्टअप इंडिया, स्टैंडअप इंडिया जैसी योजनाएँ भी इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। इन योजनाओं के तहत भारत में प्रौद्योगिकी आधारित उद्योगों को विभिन्न प्रकार के अनुदान तथा कर लाभ प्रदान किये जाते हैं। यदि इन योजनाओं को सुचारु रूप से संचालित किया जाए तो न केवल उच्च आर्थिक संवृद्धि दर प्राप्त की जा सकती

है बल्कि काफी हद तक बेरोजगारी की समस्या का भी समाधान किया जा सकता है।

भारत के अंदर शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिससे हम अपने देश की बेरोजगारी को पूर्ण रूप से दूर करने में सक्षम हो सकते है परन्तु इसके लिए भारत सरकार के साथ साथ हम सबको यह सुनिश्चित करना होगा की शिक्षा की गुणवन्ता क्या है और किस आधार पर ये वितरित की जा रही है। ताकि शिक्षा प्राप्ति के बाद उनकी रोजगार तक पहुँच सुनिश्चित की जा सके। सही मायने में भारत वर्तमान में शिक्षित बेरोजगारी की समस्या से ग्रस्त है। ऐसे में आगे बढ़ने के लिये अशिक्षितों को शिक्षा तथा शिक्षितों को उनकी क्षमता के अनुरूप रोजगार दिलाने हेतु पर्याप्त प्रयास किये जाने चाहिये।

भारत में विभिन्न प्रकार की शिक्षा प्रणाली और शिक्षा की गुणवन्ता में गिरावट एक बहुत बड़ा कारण है की देश के युवा विकास की दर को पकड़ नहीं पा रहे है और दूसरी और सरकारी प्राइमरी स्कूलों में कक्षा पाँच के छात्रों के पास न्यूनतम सामान्य ज्ञान भी नहीं होता। इस तरह से प्राथमिक स्तर पर शिक्षा प्रणाली दो भिन्न मानसिक स्तर एवं योग्यता वाले छात्रों को जन्म देती है, जिन्हें भविष्य में रोजगार प्राप्त करने में एक ही प्रतियोगी परीक्षा में प्रतिस्पर्द्धी बनना पड़ता है। जैसे–जैसे शिक्षा का स्तर बढ़ता जाता है और सही व् उच्च स्तर की शिक्षा नदारद सी नजर आती है वहां बेरोजगारी की समस्या पैदा होना एक आम बात है।

इस विषय पर भारत सरकार को ध्यान देना चाहिए और प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर तक एक समान शिक्षा प्रणाली लागू करनी चाहिए तथा स्कूलों के विभिन्न स्तरों को समाप्त कर एक समान स्कूल प्रणाली अगर लागू कर दी जाए तो गरीब व अमीर परिवार दोनों के बच्चों की मानसिक योग्यता एक प्रकार की होगी। जब इस प्रकार की कोई प्रणाली आ जाएगी तो शिक्षा के क्षेत्र के साथ साथ रोजगार के क्षेत्र में भी सुधार हो जायेगा इसलिए कहते है बेरोजगारी निवारण के लिए शिक्षा की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है जिसे सरकार और देश के सभी नागरिको को समझना होगा।

शिक्षा समाज में परिवर्तन लाने का एक मात्र अस्त्र है, जिससे भारत का प्रत्येक नागरिक आर्थिक और सामाजिक रूप से मजबूत बन सकता है और सफलता की ओर अग्रसर हो सकता है लेकिन भारत सरकार और लोगो द्वारा इसे कारगर बनाने हेतु उसका कुशल संचालन तथा लक्ष्य तय करना आवश्यक है। और एक यही उद्देश्य शिक्षा को रोजगार से जोड़कर बेरोजगारी एवं अन्य कई सामाजिक–आर्थिक समस्याओं का हल निकाला जा सकता है।

धन्यवाद

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

— **स्वामी दयानंद सरस्वती**

अहिंसा की सीमा

पीताम्बर बेहेरा
उप वित्त अधिकारी

इस भारतवर्ष में महात्मा गांधी जी की अहिंसा जनमानस में विदित है। लेकिन एक घटना इसी धर्मपारायण भूमि में घटी है जो साधारण जनमानस में चर्चित नहीं हो पायी। यह कहानी एक भक्त की है जिनका नाम श्री जयदेव महाकवि है और जिन्होंने प्रसिद्ध महाकाव्य "गीत–गोविन्द" की रचना की। इनका जन्म 1170 ई. में उड़िसा के केन्दुली शासन में हुआ था।

एक बार श्री जयदेव जी कहीं बाहर कर्मकाण्ड अनुष्ठान कराने गये थे। उनके हाथ में दक्षिणा के रूप में धन–रत्न था। रास्तें में एक जंगल को पार करते समय कुछ चोर–लुटेरों से श्री जयदेव के सामना हो गया और वे चोर–लुटेरों ने उनका सारा धन–रत्न छीन लिया एवं बिना प्रतिरोध किये श्री जयदेव जी ने सारा धन–रत्न उन चोर–लुटेरों को दे दिया। परन्तु उन चोर–लुटेरों ने श्री जयदेव जी से धन–रत्न छीन लेने के बाद भी अपना हिंसक रूप नहीं छोड़ा और बर्बरता की सीमा को लांघते हुए श्री जयदेव जी के दोनों हाथ और दोनो पैर भी काट दिये और उन्हें एक सूखे कुँए में फेंक दिया।

इसी दौरान उस इलाके के राजा श्री लक्ष्मण सेन शिकार के लिए उसी रास्ते से गुजर रहे थे तो उन्होंने उस सूखे कुँए से हरिकीर्तन ध्वनि की आवाज सुनी और अपने सैन्य दल के साथ उस सूखे कुँए में झांक कर देखा तो उन्हें प्रतीत हुआ की एक तेजस्वी महापुरुष, जिनके दोनो हाथ और पैर कटे हुए है, हरिकीर्तन कर रहा है। कर्त्तव्य–वश राजा लक्ष्मणसेन ने अपने सैन्य–दल को आज्ञा दिया की इस तेजस्वी महापुरुष को कुँए से बाहर निकालकर हमारे राजप्रसाद में ले आया जाये। घायलावस्था में श्री जयदेव जी राजा लक्ष्मणसेन के राजप्रसाद पहुंचे जहां राजा ने उनकी खूब सेवा–सुश्रूशा की। कुछ समय बीतने के बाद राजा ने श्री जयदेव जी से पूछा की महाराज आपके शरीर की यह अवस्था कैसे हुई है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए श्री जयदेव जी बताते हैं कि "मेरा जन्म इसी रूप में हुआ है"।

समय बीतता जा रहा था, कविवर स्वस्थ हो रहे थे इस दौरान कविवर राजप्रसाद में सत्संग करते रहे और राजा को साधु–सेवा करने की आज्ञा दी। राजा लक्ष्मणसेन जयदेव जी की बात को ग्रहण करते हुए स्वीकृति के साथ अखण्ड साधु–सेवा में लग गये। प्रतिदिन साधु–महात्मा आते और राजा उनकी सेवा करते, भोजन कराते और दक्षिणा देकर ही उन्हें जाने देते। इस प्रकार सारे संसार में राजा लक्ष्मण ासेन का यश व्याप्त होने लगा। इस यश को सुनकर जो चोर–लुटेरे श्री जयदेव जी की ये दुर्दशा की थी वो भी साधु का वेश बनाकर राजा लक्ष्मणसेन के दरबार में पहुंचे। जयदेव जी ने जब इन्हें देखा तो उन्होंने राजा को इन छद्‌म साधुओं की विशेष रूप से सेवा करने की आज्ञा दी। ये छद्‌म साधु राजा के राजप्रसाद में कुछ दिन रहे और राजा लक्ष्मणसेन ने इनकी खूब सेवा की। कुछ दिनों के बाद ये छद्‌म साधु सोच में पड़ गये कि हमारी इतना सेवा–सत्कार हो रहा है ये सेवा और सत्कार जयदेव के मना करने से बंद हो जायेगा और जयदेव हमारा अनिष्ट भी करा सकता है वह राजा से कहकर हमें राजा के सैनिकों से दण्ड भी दिलवा सकता है। अतएव, ये छद्‌म साधुओं ने विचार किया की उनका यहां ज्यादा दिन रहना अनुकूल नहीं है और वे अपने प्रस्थान को विचार करने लगे।

जब इन छद्‌म साधुओ के प्रस्थान करने की बात राजा को पता चला तो इसे जयदेव जी से साझा किया। इस प्रसंग में जयदेव जी ने राजा से कहा कि साधु–संत एक स्थान पर हमेशा विराजमान नहीं रहते, साधु–महात्मा तो नदी के जल की भांति होते हैं जो निरंतर चलायमान रहते हैं। अतः आप इन्हें न रोकें, इनकी विदाई पूर्ण मान–सम्मान के साथ कीजिए।

तदनुसार, ये छद्‌म साधु–संत राजाप्रसाद से राजा द्वारा दिये गये अपार धन–रत्न लेकर भारक (साथ चलने वाले

राजा के सेवक) के साथ प्रस्थान कर गये और कुछ दूर चलने के बाद एक जंगल आया जहां वे विश्राम के लिए रुके। विश्राम के दौरान राजा के भारकों ने इन साधु–संतों से पूछा महाराज अगर आप हमें आज्ञा दें तो एक प्रश्न पूछ सकते हैं क्या? छद्म साधु–संतों ने कहा हां पूछो क्या पूछना चाहते हो? इसपर भारक ने कहा की हमारे महाराज ने आपलोगों की जितनी सेवा की ही हमने आज तक अपने पूरे जीवनकाल में अपने राजा द्वारा किसी साधु–संत की इतनी सेवा करते नहीं देखा इसका क्या कारण है? इसके उत्तर में उन छद्म साधु–संतों ने बताया कि आपके राजा के राजप्रसाद में जो पंडित राजा का गुरु बनकर बैठा है वह बहुत बड़ा चोर था और चोरी करते पकड़ा गया था, इसे मृत्यु–दण्ड मिला हुआ था। हमारे द्वारा अनुरोध किये जाने पर इनके मृत्युदण्ड को कम करते हुए राजा ने केवल इनके हाथ–पैर काटकर कुंए में फेंक देने का आदेश दिया था। इन छद्म साधुओं द्वारा बोली गयी वाक्य जैसे ही समाप्त हुई, एक तीव्र गर्जना के साथ सम्पूर्ण अंचल कांप उठा एवं आकाशवाणी हुई, "ये असत्य है"। इसी आवाज के साथ पृथ्वी फट गयी और सारे छद्म–साधु, जो वस्तुतः चोर–लुटेरे थे, इसी धरती में समा गये और राजप्रसाद में विराजमान श्री जयदेव जी के कटे हुए हाथ और पैर पुनः वापस आ गये। जंगल की इस अप्राकृतिक घटना भारक ने अपने राजा को बताया तो राजा किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये और अपने गुरु जयदेव जी की तरफ देखा, तत्पश्चात् श्री जयदेव जी ने भगवान की कृपा का आश्रय लिये सरल भाव से सारा वृतांत राजा को बताया।

यह घटना भारत के इतिहास में अहिंसा के अद्वितीय प्रमाण के रूप घटित है परन्तु लोक–लोचन को आ नहीं पाया है। जिस देश में एक से बढ़कर एक साधु–संत, मनीशी उत्पन्न हुए हैं, जिनकी शिक्षाएं प्राचीन काल में भी प्रासंगिक थी, आज भी प्रासंगिक है और भविष्य में भी प्रासंगित होगी। ऐसे महापुरुषों से भारतवर्ष सुशोभित रहा है और पूरे विश्व को अहिंसा की शिक्षा दे रहे हैं।

महर्षि व्यास जी ने 18 पुराणों की रचना करने के बाद धर्म के विषय पर लिखते हैंः

अष्टादश पुराणेशु व्यासस्य वचनद्वयम। परोपकारायो पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

अर्थात् 18 पुराणों में व्यासजी की दो उल्लेखनीय बातें कही – पुण्य परोपकार है और पाप दूसरों को पीड़ा पहुंचाना है। अतः अहिंसा परमो धर्मः

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए।

– महावीर प्रसाद द्विवेदी

"चिराग"

प्रीति वाजपेयी
पत्नी श्री अमित चनपुरिया,
उप कुलसचिव

ये डगर ज्ञान की चलती है
जीवन में उजाले भर्ती है
नन्हे–नन्हे कोमल मन है
गागर उत्सुकता भरी हुई

ये जो कलम के सैनिक है
कुछ कम इनका भी काम नहीं
हर रोज लड़ाई लड़ते ये
ज्ञान की ज्योति जलाने को

शिक्षक भी अलख जगाते है
गावों में शिक्षा लाने को

सुख और सुविधा को त्याग दिया
पद छोड़ दिए नव दीप देश में जलाने को

जो आज बनाते है अफसर
कल वो भी ये बन सकते थे
पर राह चुनी है ये मुश्किल
भारत का भविष्य बनाने को

ये ज्ञान दीप ना हो जीवन में
तो घनघोर अँधेरा छायेगा
जीवन और देश की राहो में
फिर दीपक कौन जलाएगा

आधुनिक योग (हास्य कविता)

चंचल नवीन ठाकुर
निजी सहायक

एक तरीका योग का यह भी है बेजोड़।
मुँह से धुआं खींचना और नाक से छोड़।
और नाक से छोड़ फूल कर पिचके छाती।
कहें गजेडी लोग इसे भी कपाल भाती।
मुन्ना" लगता ध्यान ब्रम्ह से जुड़ता नाता।
जल्दी ही वह व्यक्ति स्वर्गवासी कहलाता।

इसलिए आप सब से विनती है कि ऐसे योग से दूर रहें और स्वस्थ रहें।

भक्त पुंडनाम की कथा

श्री गुरुवायुरप्पन मंदिर केरल के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। इसके मुख्य देवता अधिष्ठात्री देव श्री गुरुवायुरप्पन हैं। श्री गुरुवायुरप्पन भगवान कृष्ण हैं। प्राचीन ग्रंथों में वर्णित किया गया है कि जब द्वारका समुद्र में विलीन हो गई तो वासुदेव और देवकी द्वारा पूजे जाने वाले विष्णु रूप विग्रह समुद्र के बहते जल से बाहर आए और उनकी जगह वायु भगवान और गुरुदेवता ने ले ली। इसीलिए इस मंदिर का नाम श्री गुरुवायुरप्पन क्षत्रिय और देवता का नाम गुरुवरप्पन पड़ा। गुरुवायुरप्पन का चमत्कार केरल में प्रचलित है। बख्ता पोंदम नामक एक कहानी है जो इसमें बहुत प्रसिद्ध है। बख्ता पुंडनम हर महीने अपने गांव से लंबी दूरी पैदल तय करके श्री गुरुवरप्पन मंदिर के दर्शन करते थे। रास्ते में एक जंगल भी था। एक बार जंगल से गुजरते समय कुछ लूटेरों ने पुंडनम को घेर लिया। पुंडनाम ने आंखें बांधकर भगवान को प्रणाम किया। उसी समय, घोड़े पर सवार राजा का सैनिक आया और लूटेरों को मार डाला। पुंडनम बहुत खुश हुए और भगवान की लीला की प्रशंसा करने लगे। उन्होंने खुशी–खुशी अंगूठी मंगतचन को दे दी।

उस रात गुरुवायुरप्पा भगवान मंदिर के पुजारी के सपने में आए और कहा कि अगर सुबह बख्ता पुंडनम मंदिर में दर्शन करने आएं तो मेरी उंगली में एक अंगूठी है, उसे दे दो। सुबह पुजारी ने देखा कि गुरुवरप्पन के पास एक अंगूठी है। जब पुंडनम दर्शन के लिए पहुंचे तो पंडित ने सारी बात सुनाई और उन्हें अंगूठी दे दी। पुंडनाम ने अंगूठी को पहचान लिया, ''यह वही अंगूठी है जो मैंने कल मंगताचन को दी थी''... जब उन्होंने मुझे लुटेरों से बचाया। पुंडनाम ने भगवान का खेल समझ लिया। तो स्वयं कृष्ण और गुरुवायुरप्पन मंगचाचन के रूप में उनके बचाव में आए! उन्होंने मंदिर में सभी को इस चमत्कार के बारे में बताया और गुरुवायुरप्पन के गुणगान गाने लगे।

पी जी दीपा
सहायक वित्त अधिकारी

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।

– सुमित्रानंदन पंत

पतझड़

प्रज्ञा माथुर
आईपीएम 22–27 (काकीनाडा)

एक बिलख़ता हुआसा रुखा सा पत्ता

जब अपनी डाली से कट कर ज़मीन को चूमता हैं

अपने जैसे बस किसी एक सही को ढूंढता है

पर अफसोस वह उस मौसम का अंतिम पत्ता बाकि था

इस निराशा का घुट पिए मन मसोस कर जब आंखे मूंदता है

तभी किसी ने आवाज दी, की अरे सुनते हो

अंजनी आवाज, खतरे का आबाज, जब पत्ते ने सर्द हवा मैं देखा

तोह हिमपात का एक खंड था (स्नोफ्लेक)

जो पत्ते की नजर में थोड़ा मनचला, अलग और बेढंग था

सफेद रंग, चमकीली त्वचा और दाने सा आकार

न डाली न पत्ता न कबाड़

खंड सन्नाटा तोड़ कर, अपना मुँह मरोरड़कर

मुस्कुराकर पूछता है

कौन हो तुम, जो इस सर्द पौष में तिलमिला रहे हो

क्या नाम है?

खंड की बात सुनकर अचम्भे से पात बोला

मैं पात हु, इस दाल से से टूटकर

अब इस भूमि पर लिए स्थान हु

खंड मुस्काया, कहा की तुम और हम समान है

बस कुछ समय आकाश के मेहमान है

फिर अपना घर छोड़कर

इस भूमि पर गिरकर करने प्राण त्याग है

तभी तपाक से पत्ता बोला

की में नहीं मानता, मेरा जमीन भी उतनी अपनी है

जितनी दाल है

तुम क्या जीवनभर आकाश में' रहकर

जी लेते कमाल है!!

जो जिसका वक्त और' कर्म है

उसका पालन ही तोह धर्म है

यह कहकर खंड 'के' खंडीदत्त मन को

जोड़ा ही था, किन्तु वक्त 'पात के पास' थोड़ा ही था

एक हवा के झोके से, बिना किसी मौके के

पत्ते को खंड से दूर खिसकाया

किन्तु खंड के मन में एक विचार का बीज जगाया

क्या यही नियति है

जो उसपर और मुझपर बीती है?

बीतते दिन

श्रेया मिश्रा
आईपीएम 02–(2023–28)

दिन ढ़लते, पल ढ़लते, वक्त का है ये सिलसिला,
बीतते है दिन पल–भर में, नाटक है यह जीवन का सिर्फ इतना।

रेत–से फिसलते लम्हें, हाथ में पकड़ने को नहीं आते है,
बीते हुए कल को दौबारा ढूंढ़ना, सब मूर्खो का काम बताते है।

पते पर लिखे वे सपने, हवा के झोंके उड़ा ले गए,
कुछ हासिल हुए, कुछ अधूरे, कुछ दिल में रही रह गए।

पर वक्त की इन कसौटियों से ही तो सबक मिलते हैं,
रिश्तों की डोर होती मज़बूत, यादें खूबसूरत बनती जाती हैं।

आज को जी लो हॅसकर, बीते कल से ले लो सिख
वक्त है रेत का द्ररिया, बहता रहेगा थमे बिना

बुरा वक्त तो बीत जाएगा समझ, कल पर भरोसा ना करो,
चलते रहेंगे हर पल, छोडेंगे अपनी निशानियाँ।

इसी धारा में बदलते रहेंगे हम
बीते दिनों की कहानी लिखते रहेंगे हम।

छल

अतुल
नेटवर्क प्रबंधक

बात उन दिनों की है जब मेरी नयी–नयी नौकरी लगी थी। जब भी छुट्टी मिलती कहीं न कहीं घुमने निकल जाता। प्रयास करता कि किसी ऐसी जगह घुमने को मिल जाए जो किसी कहानी–किस्से से जुड़ी हो। होली आने वाली थी पर बहुत कोशिश के बाद भी घर के लिए टिकट नहीं मिल पाया। सोचा कहीं आस–पास घूम आता हूँ। तभी विकास बाबू का ध्यान आया। विकास बाबू, मेरे से उम्र कुछ बड़े किन्तु बहुत ही सहज, सरल और दोस्तों पर जान छिडकने वाले व्यक्ति थे। उनसे मेरी मित्रता किसी पत्रिका के कलम मित्र माध्यम से हुई थी। एक दो बार दिल्ली आये थे घुमने तब मुझे अपने यहाँ घुमने का निमंत्रण दे गए थे। दो चार महीनों में उनका पत्र आ ही जाता जिसके अंत में ये अवश्य लिखा होता कि कभी हमे भी अतिथि सत्कार का मौका मिले। विकास बाबू पठानकोट (हिमाचल) के पास नगरोटा रेलवे स्टेशन के स्टेशन मास्टर थे। उनके पत्रों में अक्सर उस जगह के पहाड़ी सौंदर्य का विवरण रहता। सोचा इस बार नगरोटा और विकास बाबु दोनों से मिल आया जाए। कार्यालय के बाद दो जोड़ी कपडे बैग में डाल, पहुच गया नयी दिल्ली रेलवे स्टेशन। भाग्य ने साथ दिया और जम्मू तवी एक्स्प्रेस्स में टिकेट भी मिल गयी। सोते वक़्त हिमाचल की खूबसूरती एवं दो दिन में होने वाले अनुभवों के कयास लगा रहा था।

सुबह साढ़े दस बजे के आस पास पठानकोट कोट पंहुचा और कुछ खा पी के नगरोटा के लिए लिए साधन ढूंढने लगा। पता चला की एक ही ट्रेन है जो सुबह साधे आठ बजे निकल जाती है। पर भाग्य ने फिर साथ दिया और ट्रेन देरी से होने के कारण मिल गयी। वो छोटी सी टॉय ट्रेन छोटे–छोटे पहाड़ों और झरनों को पार करती रही और मैं उन्हें देख के अभिभूत होता रहा। दोपहर को नगरोटा पहुंचा, विकास बाबु हँसते हुए प्लेटफार्म पर ही मिल गए। कई बार मना करने के बावजूद भी आग्रहपूर्वक अपने घर ले गए। हम दोनो ने साथ में खाना खाया और आराम किया। शाम को पास के ही एक पहाड़ी हाट में घुमने की ठहरी। पगडंडियों से होते हुए हम तलहटी की तरफ उतर रहे थे जब मैंने उनसे पुछा "क्यों विकास बाबू, कोई पहाड़ी लोकथा सुनाते तो बड़ा अच्छा होता।" कहने की देर थी,. उन्होंने बताना शुरू किया। पास के ही गावं का एक पहाड़ी लड़का था जो अपने ही गाँव की एक लड़की से प्यार करने लगा, पहाड़ो के साए में उनका प्यार परवान चढ़ने लगा। लड़का ढोर चराने के और लड़की पानी भरने के बहाने लगभग रोज ही मिलने लगे। गाँव वालों को ये प्रेम रास न आया, लड़के को गाँव निकाला मिला और लड़की की शादी दुसरे गाँव में कर दी गयी। कहानी कुछ आगे बढ़ी तो लड़के ने नदी के इस पार एक झोपडी बना ली और नदी के उस पार लड़की अपने पति के घर में रहने लगी।

कुछ समय बीता तो दोनों का आमना सामना हुआ और बीते हुए प्रेम ने फिर असर दिखाया। लड़की पानी भरने के बहाने लड़के से मिलने लगी, और अंत में दोनों ने नदी में कूद के जान दे दी। कहानी सुन के कुछ देर के लिए मन कुछ अजीब सा हो गया पर फिर हाट में पंहुचे तो पहाड़ी खाने एवं हस्तशिल्प नें सब ठीक कर दिया। वापस लौटते हुए सूरज डूब रहा था और रात होने लगी थी। तलहटी ऊपर चढ़ते चढ़ते चन्द्रमा निकल आया और पहाड़ों एवं पास बहती नदी ने अलग ही रूप ले लिए। नाश्ता ज्यादा करने के कारण मन में खाने की चाह ना के बराबर रह गयी थी। मैं विकास बाबू से बोला "थोड़ी देर यहीं बैठने का मन है, आपको असुविधा न हो तो आप जाइए मैं बाद में आ जाऊंगा"। उन्होंने ने एक टोर्च पकड़ाते हुए कहा "ठीक है, बैठिये मगर ज्यादा देर ना कीजियेगा, एक तो बहुत सरक्षित नहीं है ऊपर से आप बाहर से हैं। खैर, कोई बात नहीं, रेलवे स्टेशन के आस पास ही रहिएगा। आखिरी गाड़ी दस बजे के आस पास आती है, उसके बाद पक्का घर लौट आईयेगा।" जब लौटने लगे तो अचानक मुड कर बोले "थोड़ा ध्यान रखियेगा, पहाड़ों में छल होता है।"

मैं देर तक बैठा रहा, चारो तरफ चांदनी छिटक रही थी, या यूँ कहूँ पूरी प्रकृति ही चांदनी में नहाई सी लगती थी। तभी कहीं दूर से बांसुरी की तान सुनाई देने लगी। सुरों में इतना दर्द था की अनायास ही आँखें बजाने वाले को ढूंढने लगीं। थोड़ा ध्यान से देखने पर दूर नदी किनारे एक आकृति दिखाई दी, शायद कोई लड़का था जो पत्थर पे बैठा बांसुरी बजा रहा था। पास में ही उसकी झोपडी में जलने वाले दिए से कुछ प्रकाश का आभास होता था। मैं अभी सोच ही रहा था कि इतनी रात को जबकि पहाड़ के अधिकांश लोग सो जाते हैं, ये अकेला घने जंगल में बांसुरी क्यों बजा रहा है कि तभी नदी के दुसरे किनारे पर एक और परछाई दिखाई दी। कोई लड़की थी, शायद हाँथ में घड़ा था। कुछ देर किनारे पे बैठी रही, फिर अचानक घड़े की सहायता से नदी पार कर उस लड़के से जा मिली। दोनों बातें करने लगे, जैसे दुनिया में और कोई या और कुछ हो ही नहीं। मेरे मन में न जाने क्यों पंजाब के सोनी महिवाल की कहानी के पन्ने घुमने लगे। दोनों का प्रेम देख मन किसी और दिशा में चल पड़ा।

अचानक बढ़ते हुए शोर से ध्यान टुटा। देखा, बहुत सारे लोग, हाथों में लालटेन और मशाल लिए गाँव में इकट्ठे हो रहे हैं। शायद उस लड़की के घर वाले थे, और उसे ही ढूंढ रहे थे। इस बढ़ते हुए शोर से इधर प्रेमी युगल का भी ध्यान दुनिया की तरफ लौटा। लड़की वापस लौटने को तैयार हुई, पर नदी की लहरें आसमान छुनें को तैयार थी। यूँ लगा जैसे पानी की दिवार खड़ी करना चाहती हैं। नहीं कह सकता की प्रकृति ये उन दोनों को बचाने के लिए कर रही थी या उन दोनों के मिलन का अंत करने के लिए। लड़की चलने को तैयार हुई, पर लड़के ने उसका हाथ न छोड़ा। नदी के उफान को देख कर उसका जी काँप–काँप जाता था, मगर लड़की नदी में उतरने को तत्पर थी। वो जानती थी की अगर उस किनारे नहीं लौटी तो गाँव वाले इस किनारे जरूर आयेंगे। फिर दोनों का जीवन समाप्त। उसे अपनी परवाह नहीं थी बस अपने प्रेम को बचा लेना चाहती थी। उसने आखिरी बार लड़के को देखा और घड़े के सहारे नदी में उतर गयी। कुछ दूर जाने के बाद, लहरों ने लड़की को डुबोना शुरू कर दिया। ये देख लड़का भी नहीं रुक सका और लड़की को बचाने नदी में कूद पड़ा। पर ये क्या, शायद लड़के को भी तैरना नहीं आता था, केवल प्रेमवश नदी में कूद पड़ा था। दुसरे किनारे पर खड़े लोग चिल्ला रहे थे, दोनों अनैतिकता को कोस रहे थे। एक–दो तो कह रहे थे कि अच्छा हुआ, ऐसा ही होना चाहिए। इस बीच, दोनों एक दुसरे से कुछ दूर बहते हुए डूब रहे थे, उभर रहे थे। अंत में नदी की लहरों ने दोनों को अपने में समा लिया और ये देख भीड़ भी लौट पड़ी।

ऐसे उत्कट प्रेम का ऐसा अंत देख कर मन करुना से भर उठा। अपने ऊपर भी क्रोध आने लगा कि मैं भी तो भीड़ से अलग नहीं था। चुपचाप सब मूर्तिवत देखता रहा। इस वक्त प्रकृति, इश्वर और संसार तीनो ही मेरे लिए प्रेम के शत्रु हो उठे। दिल बैठने सा लगा और शारीर में रोमांच हो आया। ये दारुण दृश्य अब और देखा नहीं जा रहा था। तभी पीछे निकलती हुई ट्रेन की सीटी से ध्यान भंग हुआ। शायद आखिरी ट्रेन जा रही थी। वापस पलट के देखा तो ये क्या? न कोई झोपडी, न गाँव, ना लोग, न उफनती हुई नदी। क्या था ये सब? सर में बहुत दर्द जैसा लग रहा था। तभी याद आया, विकास बाबू ने कहा था पहाड़ों में छल होता है।" मैं उठा और बोझिल कदमों से लौटने लगा।

कभी कभी अब यूं लगता है।

राहुल पाठक
विपणन अधिकारी

कभी–कभी अब यूं लगता है।
मै बिलकुल अनपढ़ हो जाऊँ।।
हाथ पकड़ मै गढ़े मुझे फिर।
मैं बिलकुल अनगढ़ हो जाऊँ।।
छोड़ छाड़ लैपटाप और टीवी।
कंचे खेलू पतंग उड़ाऊ।।

कभी–कभी अब यूं लगता है।
मै बिलकुल अनपढ़ हो जाऊँ।।

रोज़ रात जल्दी सो पाउ।
सुबह–सुबह जल्दी उठ जाऊँ।।
टैब्लेट मोबाइल की लत से।
खुद को कुछ दिन मुक्त कराऊँ।।

कभी–कभी अब यूं लगता है।
मै बिलकुल अनपढ़ हो जाऊँ।।

तकनीकी से बेबस होकर
साधारण सा जीवन पाऊँ
पिज़्ज़ा बर्गर फास्टफूड रख
दाल रोटी का अमृत पाऊँ

कभी–कभी अब यूं लगता है।
मै बिलकुल अनपढ़ हो जाऊँ।।

चाय को मना कौन करता है भई

सुमिता मरवाह
अनुभाग अधिकारी

सुगंध छोड़ती ले आती है बहार
कड़वी है काफी और
चाय की है अपनी मिठास
काफी बोले अंग्रेजी और
चाय अपनी हिंदी में करती है बात
थकान मिटा देती है हाय
इसे मना कौन करता है भई

छंद–1 कत्थई सी, रसीली सी, नशीली सी
अदरक सी तीखी, गुड सी मीठी
इलाइची सी मोहक, रोचक विमोचक
करंट मारती, जगाती हंसाती
बातें कराती, मूड बनाती
मिलने के बहाने सुझाती मुस्कुराहटें लाती
कड़क रसीली नशीली चाय, होश खोल देती
हाय इसे मना कौन करता है भई

छंद–2 लेखक रसपान कर उपन्यास लिख दें
कवी मीठी जुबान लिख दें
फिल्मकर कहानी गढ़ दें पात्र सब मुँह जबानी कर दें
टपरी पे की कटिंग देती है गुहार

छंद–3 काफी से कोई तकलीफ नही
उनकी अपनी है शान होगी कोई ऊंची दुकान
होगे एयर कंडीश्नर में मौका अमेरिकानों
की चुस्की के अलग स्वाद
तुम्हारी काफी रहें आबाद
पर अपनी चाय जिन्दाबाद, जिन्दाबाद

छंद–4 फिर कांच के कप में मचतली चली आये
कैसी चमक छोड़ती हाय
इसे मन कौन करता है भई
कड़क रसीली नशीली चाय
कड़क रसीली नशीली चाय
इसे मना कौन करता है भई

आइये जानें डिजीलॉकर क्या है

राजीव दत्ता
सलाहकार (तकनीकी)

वैसे तो आप मे से बहुत से लोग डिजीलॉकर के बारे मे शायद जानते होंगे फिर भी बहुत से लोग संभवतः इसके बारे मे ना भी जानते हों। इसलिए आइये डिजीलॉकर की विस्तृत जानकारी लेते हैं।

डिजीलॉकर एक भारतीय डिजिटलीकरण ऑनलाइन सेवा है जो इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अपनी डिजिटल भारत पहल के तहत प्रदान की जाती है। डिजिलॉकर के माध्यम से, आप अपने आधार कार्ड, पैन कार्ड, वोटर आईडी, पासपोर्ट आदि जैसे दस्तावेजों को डिजिटल रूप से स्टोर कर सकते हैं और जरूरत पड़ने पर उन्हें निकाल सकते हैं। डिजीलॉकर आपको आपके दस्तावेजों के लिए एक विश्वसनीय और सुरक्षित स्टोरेज प्रदान करता है।

डिजीलॉकर प्रत्येक आधार कार्ड धारक को इन प्रमाण पत्रों के मूल जारीकर्ताओं से डिजिटल दस्तावेज में ड्राइविंग लाइसेंस, वाहन पंजीकरण, शैक्षणिक मार्क शीट जैसे प्रामाणिक दस्तावेजों/प्रमाण पत्रों का उपयोग करने के लिए क्लाउड में एक खाता प्रदान करता है। यह विरासत दस्तावेजों की स्कैन की गई प्रतियों को अपलोड करने के लिए प्रत्येक खाते में 1जीबी भंडारण स्थान भी प्रदान करता है।

यह सुविधा पाने के लिए आप के पास भारत सरकार द्वारा प्रद्दत आधार कार्ड होना चाहिए। अपना आधार अंक डाल कर आप अपना डिजिलॉकर खाता खोल सकते हैं और अपने जरूरी दस्तावेज सुरक्षित रख सकते हैं। आधार कार्ड की अनिवार्यता इस तरह से इस प्रणाली के दुरुपयोग की संभावना को बेहद कम कर देती है। इस सुविधा की खास बात ये हैं कि एक बार लॉकर में अपने दस्तावेज अपलोड करने के बाद आप कहीं भी अपने प्रमाणपत्र की मूलप्रति के स्थान पर अपने डिजिलॉकर की वेब कड़ी (यूआरएल) दे सकेंगे।

डिजीलॉकर पर 14.93 करोड़ से अधिक उपयोगकर्ता पंजीकृत हैं। डिजीलॉकर पर सरकारी विभागों द्वारा जारी किए करीब 300 प्रकार के प्रमाणपत्र या पहचान पत्र इत्यादि स्टोर किये जा सकते हैं।

कार्य–प्रणाली

डिजीटल लॉकर को खोलने के लिए आपको डिजिलॉकर की वेबसाइट https://digilocker-gov-in/ पर जाकर अपना खाता खोलना होगा। पंजीकरण करने के लिए आपको मुख्यपृष्ठ पर (अभी रजिस्टर करें) नामक बटन दबाना होगा और फिर नए खुले पृष्ठ पर अपने आधार कार्ड का नंबर डालना होगा। फिर आप ओटीपी या अंगुली के निशान के जरिए लॉगिन (अंदर प्रवेश) कर सकते हैं। लॉगिन होने के बाद आपसे जो सूचना मांगी जाए उसे भरें। इसके बाद आपका खाता बन जाएगा। खाता खुलने के बाद आप कभी भी इस पर अपने व्यक्तिगत दस्तावेज डाल (अपलोड कर) सकेंगे और बिना किसी शुल्क के सुरक्षित रख सकेंगे।

डिजिटल लॉकर के माध्यम से प्रदान और साझा किए गए जारी किए गए दस्तावेज समान भौतिक प्रमाण पत्र के बराबर हैं।

डिजीलॉकर में डिजिटल ड्राइविंग लाइसेंस और वाहन आरसी कानूनी रूप से आईटी अधिनियम, 2000 के साथ–साथ मोटर वाहन अधिनियम, 1988 के तहत वैध है।

सुविधाएं

डिजिटल लॉकर की सबसे बड़ी सुविधा ये हैं कि उपयोगकर्ता कहीं से भी और कभी भी अपने दस्तावेजों को इसके जरिए जमा कर सकते हैं। उन्हें निशुल्क सुरक्षित रख सकते हैं, किसी भी सरकारी काम जहाँ दस्तावेजों की प्रमाणित प्रतियाँ

देना अनिवार्य होता है वहाँ मूलप्रति या उसकी छायाप्रति देने की बजाय अपने लॉकर का यूआरएल दे सकते हैं। अधिकारी वहाँ से इन प्रमाणपत्रों को देख सकते हैं। इस तरह से भारतीय नागरिकों को हर जगह अपने जरूरी दस्तावेज लेकर घूमने की जरूरत नहीं है।

मूल मुद्रित प्रति तो उस व्यक्ति के पास ही रहेगी, सिर्फ उसकी छायाप्रति ही वेबसाइट पर रखनी होगी। इसको ही डिजिटल स्वरूप कहते हैं। वेबसाइट में कहा गया है, डिजिटल लॉकर अधिकृत उपभोक्ताओं/एजेंसियों को किसी भी समय और कहीं भी अपने दस्तावेजों को सुरक्षित तरीके से अपलोड और साझा करने की सहूलियत देता है। (10)

सुरक्षा

भारत सरकार के सूचना एवं आईटी विभाग द्वारा प्रबन्धित यह लॉकर सेक्योर सॉकेट लेयर(एसएसएल) के द्वारा एचटीटीपीएस सुरक्षा प्रणाली द्वारा सुरक्षित है जो कि फिलहाल वेबसाइट सुरक्षा के लिए सबसे सुरक्षित प्रणाली है।(11) वेबसाइट के यूआरएल (https://web-archive-org/web/20150630200953/https://digitallocker-gov-in/) में https:// और उसके आगे एक हरा ताला इसकी सुरक्षा का द्योतक है। यहाँ s का मतलब अंग्रेजी का शब्द secure है जिसका हिंदी में अर्थ सुरक्षित होता है।

अगर आप https:// और हरा ताला यानि नहीं देख पा रहे हैं तो इसका मतलब आप किसी फर्जी वेबसाइट पर हैं जो आपकी जानकारियाँ चुरा सकता है।

हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।

— **डॉ. सम्पूर्णानंद**

स्टार्टअप्सः देश और जनता के लिए एक संवर्धनशील विकल्प

मरियमा कुरियन
सलाहकार

स्टार्टअप्स नए और नवाचारी व्यवसायों को संचालित करने का एक प्रेरणादायक तरीका है जो न केवल अभिनव विचारों को बढ़ावा देता है, बल्कि विश्व की अर्थव्यवस्था और समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। स्टार्टअप्स का उद्भव और विकास विभिन्न क्षेत्रों में समृद्धि के माध्यम बन चुका है, जैसे कि तकनीकी उत्पादों की विकसित, सामाजिक समस्याओं के समाधान, और आर्थिक विकास।

आर्थिक विकास की दृष्टि से, स्टार्टअप्स नए और विशेषतः के उत्पादों और सेवाओं का निर्माण करते हैं, जो अभिनवता और उत्कृष्टता के साथ आर्थिक लाभ प्रदान करते हैं। उदाहरण के रूप में, डिजिटल भुगतान की सेवाएं, ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स, और अन्य ऑनलाइन सेवाएं नए उत्पादों के रूप में सामाजिक मीडिया, ब्लॉगिंग प्लेटफॉर्म्स, और डिजिटल स्वास्थ्य एप्लिकेशन्स जैसी अन्य सेवाओं के उत्पादन में समाहित होते हैं।

स्टार्टअप्स का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू तकनीकी प्रगति को संवारित करने में है। वे नए और नवाचारी तकनीकों को उत्पादित करते हैं जो सामाजिक समस्याओं का समाधान करते हैं और लोगों के जीवन को आसान बनाते हैं। उदाहरण के रूप में, फिनटेक स्टार्टअप्स ने वित्तीय सेवाओं को उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जो आम लोगों के लिए सुलभ और पहुंचने वाला है।

इन स्टार्टअप्स के सफलतापूर्वक काम करने से, न केवल नए रोजगार के अवसर पैदा होते हैं, बल्कि वे लोगों को नए और सुगमता से भरपूर अनुभव प्रदान करते हैं। स्टार्टअप्स नई विचारधारा और नई सोच का प्रतीक होते हैं जो आम लोगों के जीवन में उत्साह और आत्मविश्वास का स्रोत बनते हैं।

अतः, स्टार्टअप्स का समर्थन करना और उन्हें प्रोत्साहित करना हमारी सोच को अद्यतित और प्रगतिशील बनाने के लिए आवश्यक है। इन्हें बढ़ावा देने से हम न केवल व्यक्तिगत लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि देश और समाज के साथ हमारे समृद्ध भविष्य के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं।

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही,
यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी

— **सी. राजगोपालाचारी**

प्रौद्योगिकी

अभिषेक
कनिष्ठ सहायक

प्रौद्योगिकी की व्यवस्था आजकल एक महत्वपूर्ण विषय है जो समृद्धि और समाज की उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। निम्नलिखित कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं के माध्यम से हम देख सकते हैं कि प्रौद्योगिकी की व्यवस्था क्यों महत्वपूर्ण है:

1. **सुगमता और कार्यक्षमता:** उच्च स्तरीय प्रौद्योगिकी की व्यवस्था सुगमता और कार्यक्षमता में सुधार करती है, जिससे कार्य प्रभावी और तेजी से हो सकता है।
2. **संचार का सुधार:** तकनीकी व्यवस्था संचार को अधिक सुगम बनाती है, जिससे लोग अन्य साधनों से अधिक व्यावसायिक और सामाजिक रूप से जुड़े रह सकते हैं।
3. **समर्थन और सुरक्षा:** प्रौद्योगिकी की व्यवस्था नेटवर्क सुरक्षा और डेटा सुरक्षा में सुधार करती है, जिससे आत्मविश्वास और सुरक्षा महसूस की जा सकती है।
4. **उत्पादकता और गुणवत्ता:** उच्च स्तरीय प्रौद्योगिकी व्यवस्था उत्पादकता में वृद्धि और उत्कृष्ट गुणवत्ता के स्तर को बढ़ाती है।
5. **स्थिरता और प्रतिस्थापनीयता:** व्यवस्था में स्थिरता और प्रतिस्थापनीयता को बनाए रखने में मदद करती है, जिससे उपयोगकर्ताओं को निरंतर सेवा मिल सके।
6. **इनोवेशन का प्रोत्साहन:** प्रौद्योगिकी की व्यवस्था नई और नवाचारी तकनीकों को प्रोत्साहित करती है, जो समाज में वैज्ञानिक और तकनीकी विकास में मदद करती है।
7. **सामाजिक समृद्धि:** उच्च स्तरीय प्रौद्योगिकी समाज की समृद्धि और विकास में सहायक होती है, जिससे सभी वर्गों के लोगों को लाभ मिल सके।
8. **आधुनिकीकरण की दिशा:** प्रौद्योगिकी की व्यवस्था आधुनिकीकरण की दिशा में सहायक होती है और समाज को विश्वस्तरीय स्तर पर ले जाने में मदद करती है।

इन पहलुओं से स्पष्ट होता है कि प्रौद्योगिकी की व्यवस्था आजकल समाज और विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके बिना, समाज का विकास और समृद्धि संभव नहीं है।

> जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है,
> वह उन्नत नहीं हो सकता।
>
> – **डॉ. राजेंद्र प्रसाद**

एक उड़ान

शालु वशिष्ठ
आर.ए. ईसीजीसी

आशा नन्ही सी जान की,
आशा एक पहचान की,
लिए एक मूस्काता चेहरा,
आशा एक उड़ान की।

देखा एक आसमान, पाया बंधनों का जहान,
सोचा ही ना, होगी मुश्किल, एक छोटी सी उड़ान।

सहमी, ठहरी, मन को समझाया,
ना इतना भी मुश्किल, जितना दुनिया ने बताया,

मिले हिम्मत के पंख, फिर ना डरी नन्ही सी जान,
देखा फिर दुनिया ने, कैसे भरी उसने, फ़लक की सबसे ऊँची उड़ान।

भारतीय भाषाएँ नदियां हैं और हिंदी महानदी।

– **रवींद्रनाथ टैगोर**

कार्यस्थल पर पेशेवर अंदाज

वैभव यादव
वरिष्ठ सहायक

किसी संगठन की पहचान वहाँ के कर्मचारियों की कार्यशैली के आधार पर होती है। किसी संस्थान के कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों का कार्य के प्रति अपना–अपना नजरिया होता है। जहाँ एक तरफ कुछ लोग सकारात्मक होते हैं तो कुछ लोगों की सोच बेहद नकारात्मक होती है। आईये देखें नकारात्मक सोच रखने वाले लोग कार्यस्थल पर प्रायः किस प्रकार पेश आते हैं। लोग उनके विषय में कैसी धारणा रखते हैं तथा नकारात्मक सोच के स्थान पर उन्हें किस प्रकार अपने को प्रस्तुत करना चाहिए। आइये अपनी कमियों को जानें, स्व–मूल्यांकन करें तथा तदनुसार आवश्यक परिवर्तन करें ताकि हम बेहतर सेवा कर सकें।

क्रम सं.	नकारात्मक सोच वाले कहते हैं	उनके विषय में लोगों की अवधारणा	सुझाव
1.	"मुझे पता नही/मालूम नही।"	○ अनभिज्ञ हैं। ○ न तो अद्यतन जानकारी है और न ही ऐसा करने की इच्छा। ○ वह साधन संपन्न नही है।	○ जानकारी न होना कोई अपराध नहीं है परन्तु अपेक्षित विषय में, किसी विषय में जानकारी की कोशिश ही न करना अवश्य दंडनीय है। ○ बेहतर है यह कहा जाये– "मै पता लगाकर इसे पूरा कर लूंगा।"
2.	"मुझे किसी ने बताया ही नही।"	○ दूसरों के निदेश की ही प्रतीक्षा करता है। ○ स्वयं कार्य करने की आदत नहीं है। ○ वह कार्य की पहल नहीं करता है।	○ कार्य के प्रति अपनी जवाबदेही समझें और स्वयं जाने की आपको क्या करना है।
3.	"जैसा आप कहेंगे, मैं वैसा ही करूँगा।"	○ कार्य की जानकारी नहीं है। ○ स्वंय विचार करने का सामर्थ्य नही है। ○ जिम्मेदारी से बचना चाहता है। ○ निर्णय लेने की क्षमता नहीं है। ○ आत्म सम्मान की भावना नहीं है।	○ कुछ लोग बॉस को खुश करने के लिये ऐसा करते हैं परन्तु इससे लोगों पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता है। ○ किसी मुद्दे पर निर्णय लेने में सहयोग देते हुए अपनी राय अवश्य दें।

4.	"आपने मुझे ऐसा ही करने के लिये कहा था।"	○ निर्णय लिये जाने में कोई भूमिका नहीं है। ○ टीम भावना नहीं है।	○ निर्णय लिये जाते समय अपने विचार अवश्य व्यक्त करें। ○ यदि निर्णय लिया जा चुका है तो पूरी लगन से उसका कार्यान्वयन करें।
5.	"मुझे यह ऐसा ही मिला।"	○ व्यक्ति का कार्य से जुड़ाव नहीं है। ○ आवश्यक जाँच बिन्दुओं का प्रयोग नहीं करते हैं। ○ गम्भीर दृष्टिकोण का अभाव।	○ अपनत्व की भावना का विकास करें एवं स्वयं को संबन्धित कार्य में सम्मिलित करें।
6.	"मुझे ऐसा सूचित किया गया।"	○ अपनी जिम्मेदारी को दूसरों पर डालते हैं। ○ पर्याप्त ध्यान नहीं देते हैं। ○ कार्य की बारीकी से जाँच नही करते हैं। ○ कमजोर नेतृत्व की क्षमता।	○ न्यूनतम जाँच प्रक्रिया अपनाएं और नकारात्मक प्रभव से बचने के लिये स्वयं व्यक्तिगत मूल्यांकन करें।
7.	"मै बहुत व्यस्त था।"	○ समय प्रबन्धन की कमी। ○ दक्षता में कमी।	○ कार्य को भली–भाँति समझें और योजनाबद्ध मूल्यांकन करते हुए अच्छी तरह से कार्य करें जिससे ऐसी स्थिति आने ही न पाए।
8.	"हम पहले से ही ऐसा करते आ रहे हैं।"	○ अद्यतन ज्ञान का अभाव। ○ पुराने विचार को बदलने का अभाव। ○ परिवर्तन विरोधी।	○ प्रक्रिया में निरंतर सुधार के लिये उचित सुझाव को स्वीकार करें तथा स्वयं सकारात्मक चिंतन करें।
9.	"मैं कार्य कर रहा हूँ।" "मैं अपनी ओर से पूरी कोशिश कर रहा हूँ।"	○ वचनबद्धता की कमी है। ○ शायद कार्य आरंभ ही नहीं किया गया है।	○ कार्य के प्रति वचनबद्धता का ध्यान रखा जाये।
10.	"मैं कोशिश करूँगा।"	○ वचनबद्धता की कमी है। ○ सफलता में संदेह और दृढ़ विश्वास का अभाव है।	○ सही और यथार्थ स्थिति बताई जाये।

11.	"मेरे अधीनस्थ कर्मचारी अयोग्य हैं।"	o अधीनस्थ कर्मचारियों पर आवश्यकता से अधिक निर्भर रहते हैं। o अधीनस्थ कर्मचारियों के समुचित विकास हेतु प्रयास का अभाव है। o कमजोर नेतृत्व क्षमता।	o प्रशिक्षण और वार्तालाप से अधीनस्थ कर्मचारियों को बेहतर कार्य करने के लिये प्रशिक्षित किया जाये। o उन्हें अपने विचार व्यक्त करने हेतु प्रोत्साहित करें जिससे उनकी सहभागिता सुनिश्चित हो सके।
12.	"मेरे पास स्टाफ की कमी है।"	o समस्या के समाधान में बिल्कुल प्रयास नहीं करना चाहते हैं।	o उच्च स्तरीय कम्प्यूटरीकरण तथा स्टाफ का विकास ही एकमात्र विकल्प है।
13.	"मेरी कोई सुनता ही नहीं है।"	o व्यवहार कुशलता एवं नियंत्रण की कमी।	o व्यक्ति को सही, निष्पक्ष, सच्चा. व्यवहार कुशल तथा दृढ़ होना चाहिए।
14.	"यह मेरा कार्य नही है।"	o अनुशासन की कमी। o सत्यनिष्ठा तथा टीम भावना का अभाव है।	o बॉस ने जो आदेश दिया है वही आपके लिये कार्य है। o दिये गये कार्य को करने से इन्कार न करें।
15.	"सिस्टम में ऐसा करना संभव नही है।"	o संकल्प और प्रतिबद्धता का अभाव है। o कार्य में जल्दी हाथ खड़े कर देते हैं। o कार्य के प्रति नकारात्मक सोच एवं रवैया है।	o सामान्यतया प्रणाली में हर परिस्थिति से निपटने के लिये आवश्यक व्यवस्था होती है। पहले सभी विकल्प देख लें। जरूरत पड़ने पर अभिनव प्रयास करें।
16.	"यह कार्य बड़ा मुश्किल है।"	o गुमराह करने वाली प्रवृत्ति। o कार्य से बचने की मनोवृत्ति।	o कोई कार्य मुश्किल नही है, ऐसा कहें। o यदि मेरे लिये मुश्किल है तो दूसरों के लिये असंभव होगा। o अपनी सोच सकारात्मक करें तथा मनोवृत्ति में परिवर्तन करें।
17.	"यह कार्य मैंने किया।"	o दूसरों के न्यून और अपने को श्रेष्ठ प्रदर्शित करने की भावना है। o आपसी मेल–जोल की भावना की कमी।	o "कार्य हो गया" ऐसा कहना स्वस्थ मानसिकता एवं टीम भावना दर्शाता है।

शीर्षक: मोबाइल फोन की लत से संतुलित जीवन की ओर

आज की तेज–तर्रार दुनिया में ऐसा लगता है जैसे हमारे मोबाइल फोन हमारे ही शरीर का कोई अतिरिक्त अंग बन गए हैं। जिस क्षण हम जागते हैं उस क्षण से लेकर जब हम सो जाते हैं, हम अपने आप को मोबाइल पर स्क्रॉल करते, टैप करते और स्वाइप करते हुए पाते हैं। नौबत ये आ चुकी है कि हम अपनी आस पास की दुनिया से बेखबर रहने लगे है। गूगल की अंतहीन सूचनाओं और लत बन रही ऐप्स के आकर्षण के बीच एक खतरनाक जाल छिपा है – जो हमारी उत्पादकता, रचनात्मकता और कीमती समय को धीरे–धीरे लूट रहा है।

मोबाइल फोन की लत के नुकसान

उत्पादकता में कमी: हम बिना सोचे–समझे सोशल मीडिया फीड स्क्रॉल करने या अपने फोन पर गेम खेलने में कितने घंटे बिताते हैं, और अंत में महसूस यह होता है कि हमने कुछ भी हासिल नहीं किया है। मोबाइल फोन की लत हमारी उत्पादकता को कम कर देती है, जिससे हम अधूरा और निराश महसूस करते हैं।

सामाजिक वियोग: विडंबना यह है कि जबकि हम अपने डिजिटल उपकरणों के माध्यम से पहले से कहीं अधिक जुड़े हुए हैं, मोबाइल फोन की लत अकेलेपन और अलगाव की भावनाओं को जन्म दे रही है। माता–पिता और बच्चों का पारिवारिक समय मोबाइल फोन ने छीन लिया है। पारस्परिक मेल–जोल की अपेक्षा वर्चुअल मीटिंग्स, विडियो काल्स हमारी प्राथमिकतायें बन चुकी है। सामाजिक सरोकार से हमें अकेलापन अधिक भाने लगा है।

नकारात्मक स्वास्थ्य प्रभाव: अत्यधिक मोबाइल स्क्रीन पर समय बिताने से बहुत सी स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जिसमें आंखों पर तनाव, नींद के पैटर्न में गड़बड़ी और यहां तक कि चिंता और अवसाद जैसे मानसिक स्वास्थ्य विकार भी शामिल हैं। जब हम घंटों तक स्क्रीन पर बैठे रहते हैं, शारीरिक गतिविधि और बाहरी गतिविधियों की उपेक्षा करते हैं, तो हमारे शरीर को नुकसान होता है।

घटती रचनात्मकता: आर्टिफीशिअल इंटेलिजेंस और इन्टरनेट से हमें हमारी जानकारियां तुरंत मिलने लगी है और हम भी बिना सोचे समझे उनका प्रयोग करने लगे है, जिससे हमारी रचनात्मकता और सोच कौशल की हानि हो रही है। गहरे, सार्थक कार्यों में संलग्न होने के बजाय हम जानकारी के निष्क्रिय उपभोक्ता बन जाते हैं और अपने डिजिटल दायरे से बाहर सोचने में असमर्थ हो जाते हैं।

मोबाइल फोन के जाल से कैसे मुक्त हों

सीमाएँ निर्धारित करे: अपने फोन के उपयोग के संबंध में स्पष्ट सीमाएँ स्थापित करके प्रारंभ करें। संदेशों और सोशल मीडिया की जाँच के लिए दिन के विशिष्ट समयों का निर्धारण करें और उनका पालन करें। अपने घर या कार्यस्थल पर ''फोन–मुक्त क्षेत्र'' बनाएं जहां इलेक्ट्रॉनिक उपकरण प्रतिबंधित हों, जिससे आप बिना ध्यान भटकाए सार्थक गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

माइंडफुलनेस का अभ्यास करें: माइंडफुलनेस तकनीकों का अभ्यास करके अपने फोन की आदतों के बारे में जागरूकता पैदा करें। आदतन अपने फोन तक पहुँचने से पहले, रुकें और अपने आप से पूछें कि क्या यह वास्तव में आवश्यक है। गहरी साँसें लें और अपने आस–पास के दृश्यों, ध्वनियों और संवेदनाओं का आनंद लेते हुए वर्तमान क्षण में तालमेल बिठाएँ।

वास्तविक जीवन की गतिविधियों में संलग्न रहें: ऑफलाइन गतिविधियों की खुशियों को फिर से खोजें जो आपके मन, शरीर और आत्मा को पोषण देती हैं। प्रियजनों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताएं, ऐसे शौक और रुचियों को पूरा करें जो आपके जुनून को प्रज्वलित करें, और खुद को प्रकृति की सुंदरता में डुबो दें। डिजिटल विकर्षणों पर वास्तविक जीवन के अनुभवों को प्राथमिकता देकर आप संतुष्टि और जुड़ाव की गहरी भावना विकसित करेंगे।

डिजिटल डिटॉक्स: डिजिटल डिटॉक्स शुरू करने पर विचार करें – एक ऐसी अवधि जब आप अपने

उपकरणों से पूरी तरह से अलग हो जाते हैं। छोटे–छोटे समय अंतरालों से शुरू करें जैसे कि कुछ घंटे या एक दिन और जैसे–जैसे आप अधिक सहज होते जाएं धीरे–धीरे अवधि बढ़ाएँ। इस समय का उपयोग अपने आप से दोबारा जुड़ने, आत्म–चिंतन में संलग्न होने और उन गतिविधियों को करने में करें जो आपको खुशी देती हैं।

लक्ष्य निर्धारित करें और प्राथमिकता दें: अपने दीर्घकालिक लक्ष्यों और आकांक्षाओं को पहचानें और आकलन करें कि कहीं आपका फोन उपयोग आपके लक्ष्यों के बीच तो नहीं आ रहा। क्या आपकी डिजिटल आदतें आपको अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने में मदद कर रही हैं, या वे आपको रोक रही हैं? उन गतिविधियों को प्राथमिकता दें जो आपके व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास में योगदान करती हैं और उन विकर्षणों को सीमित करें जो आपकी प्रगति में बाधा डालते हैं।

समर्थन खोजें: अपने आसपास ऐसे सहायक व्यक्तियों से मित्रता बढ़ाये जो संतुलित जीवनशैली बनाए रखने के महत्व को समझते हों। अपने लक्ष्यों और चुनौतियों को दोस्तों, परिवार के सदस्यों या सहायता समूहों के साथ साझा करें और अपने इरादों के प्रति सच्चे रहने के लिए एक–दूसरे को इसका श्रेय दें।

कुछ स्ट्रेटेजीज जो आपकी मदद कर सकती है:

- कुछ गैर–जरुरी Notifications को बंद कर दें।
- अपने मोबाइल स्क्रीन टाइम का ध्यान रखें और इसे घटाने की कोशिश करें।
- सोते वक्त अपने मोबाइल को दूर रखें।
- अनचाही सोशल मीडिया एप्स को हाईड कर दें या इनका इस्तेमाल कम कर दें।
- अपने स्मार्ट फोन को जितना हो सके उतना Less Accessible बनाने की कोशिश करें ताकि हमारा ध्यान बार–बार मोबाइल की तरफ न जाये।
- मोबाइल में टच आई डी या फेस आई डी की जगह पासवर्ड का यूज करें ताकि फोन को अनलॉक करने में थोडा टाइम लगे। फोन को अनलॉक करने में हुई देरी से इसके इस्तेमाल में कमी आ सकती है।
- स्क्रीन ब्राइटनेस को कम रखने का प्रयास करें।

निष्कर्ष:

आइए हम एक संतुलित जीवन विकसित करने का प्रयास करें – जहां प्रौद्योगिकी हमारी भलाई को कम करने के बजाय बढ़ाती है और जहां हम मानवीय संबंधों की समृद्धि और हमारे आस–पास की दुनिया की सुंदरता को अपनाते हैं।

नीरज कुमार
वरिष्ठ प्रशासनिक सहायक
आई सी सी डी

मीठे बोल

सतपाल
वरिष्ठ सहायक

''के फायदे'' अनेक होते हैं, जो निम्नलिखित हैं:

मीठे बोल का उपयोग करना संबंधों को संवारता है और साथीत्व में मधुरता और सम्मान को बढ़ावा देता है। यह लोगों के बीच विश्वास और समर्थन को बढ़ाता है। मीठे बोल से भरा वातावरण सकारात्मक और संरचित होता है, जिससे कार्यभार और संबंधों को सुगम बनाने में मदद मिलती है। कठिनाईयों और विवादों के समय, मीठे बोल विनम्रता और संवेदनशीलता का संदेश देता है, जिससे उन्हें हल करने में मदद मिलती है। मीठे बोल का प्रयोग करने से व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है और उसे संबंधों में अधिक सकारात्मक रूप से शामिल होने की प्रेरणा मिलती है। मीठे बोल का प्रयोग करने से व्यक्ति का व्यक्तित्व अधिक समृद्ध और उत्तेजित होता है, जिससे उसकी सामाजिक हितैषी और सहयोगी प्रवृत्ति बढ़ती है। मीठे बोल से, हम अपने संबंधों को मजबूत करते हैं। यह दूसरों के साथ संवाद में मधुरता और सम्मान की भावना को प्रकट करता है, जो संबंधों को मजबूत और सामर्थ्य देता है। मीठे बोल से, हम दूसरों को आत्मविश्वास और समर्थन का संदेश देते हैं। यह उन्हें अधिक सुरक्षित और स्थायी महसूस कराता है। मीठे बोल का उपयोग करके, हम संघर्षों और विवादों को सुलझा सकते हैं। यह अस्पष्टता और विरोध को कम करता है और सहमति और समझौते की दिशा में सहायक होता है। मीठे बोल से, हम अपनी संगठनात्मक क्षमता को बढ़ाते हैं। यह हमें सहयोग की भावना और संघटनशीलता को प्रोत्साहित करता है। मीठे बोल से, हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है। यह हमें खुद को स्वीकारने और खुद के विचारों को प्रकट करने के लिए प्रोत्साहित करता है। ''मीठे बोल'' के उपयोग से हमें समाज में समृद्धि, संघर्षों का सामना, और आत्मविश्वास के बढ़ने में मदद मिलती है। ''मीठे बोल'' का प्रयोग करना हमें सामाजिक संबंधों को स्थायी और सुदृढ़ बनाए रखने में मदद करता है और हमें सकारात्मकता और सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है।

अंत में मीठे बोल की ताकत को समझो और उस पर अमल करो कुछ नहीं रखो किसी से जलने में चिड़ने में नीचा दिखने में। सीड़ियो पर कोई कितना ही ऊपर चले जाए आना उसको नीचे ही है।

> हिन्दी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।
>
> – **डॉ. राजेंद्र प्रसाद**

चित्रकला

लायशा ठाकुर
सुपुत्री – सुश्री चंचल नवीन ठाकुर

चित्रकला

शिविका दुग्गल
सुपुत्री – श्री करुण दुग्गल

आईआईएफटी ने 60वां स्थापना दिवस मनाया

2 मई 2023 को भारतीय विदेश व्यापार संस्थान(आईआईएफटी) ने अपनी हीरक जयंती मनाई। इस महत्वपूर्ण अवसर पर, डॉ. सतिंदर भाटिया, कुलपति, आईआईएफटी ने स्वर्गीय श्री एच.डी. शौरी, संस्थापक महानिदेशक को याद किया। उन्होने इसका उल्लेख किया की वह आईआईएफटी के लिए पिता तुल्य थे, जिन्होंने इसकी नींव आदर्श वाक्य 'उत्कृष्टता जीवन जीने का एक ढंग है' के साथ रखी। इस अवसर पर, संस्थान ने डॉ. संगीता शंकर, एक विश्व प्रसिद्ध वायलिन वादिका द्वारा एक हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया।

हिंदी पखवाड़ा दिनांक 14 सितम्बर, 2023 से 29 सितम्बर, 2023

हिंदी पखवाड़ा 2023 में विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत विजेताओं के नाम

क) हिंदी निबंध प्रतियोगिता।

अनुक्रमांक	प्रतियोगी का नाम	प्रतियोगिता में स्थान	पुरस्कार राशि रू
1.	श्री राकेश कुमार यादव	प्रथम	2000.00
2.	श्री नवीन(अहिंदी भाषी)	प्रथम	2000.00
3.	श्री गिरीश कुमार गुप्ता	द्वितीय	1500.00
4.	श्री प्रवीण कुमार यादव	तृतीय	1300.00
5.	सुश्री नलिनी मेशराम	प्रोत्साहन	500.00
6.	श्री वैभव यादव	प्रोत्साहन	500.00
7.	श्री सते सिंह	प्रोत्साहन	500.00
8.	श्री अजय शर्मा	प्रोत्साहन	500.00
9.	सुश्री करिश्मा खान	प्रोत्साहन	500.00

ख) हिंदी प्रशोत्तरी प्रतियोगिता।

अनुक्रमांक	प्रतियोगी का नाम	प्रतियोगिता में स्थान	पुरस्कार राशि रू
1.	श्री आयुष शुक्ला	प्रथम	2000.00
2.	श्री संजीव कुमार	द्वितीय	1500.00
3.	श्री अविनाश कुमार	तृतीय	1300.00
4.	श्री उत्सव कुशवाह	प्रोत्साहन	500.00
5.	श्री ईशव	प्रोत्साहन	500.00
6.	श्री राज कुमार यादव	प्रोत्साहन	500.00
7.	सुश्री रूही खान	प्रोत्साहन	500.00
8.	सुश्री सीमा यादव	प्रोत्साहन	500.00

ग) हिंदी टंकण प्रतियोगिता।

अनुक्रमांक	प्रतियोगी का नाम	प्रतियोगिता में स्थान	पुरस्कार राशि रू
1.	श्री मनीष शर्मा	प्रथम	2000.00
2.	सुश्री दीपा (अहिंदी भाषी)	प्रथम	2000.00
3.	सुश्री सीमा शर्मा	द्वितीय	1500.00
4.	सुश्री मीनाक्षी सक्सैना	तृतीय	1300.00
5.	श्री सतपाल सिंह	प्रोत्साहन	500.00
6.	श्री संजय कुमार	प्रोत्साहन	500.00
7.	श्री आशीष कुमार	प्रोत्साहन	500.00
8.	श्री सोजल गुप्ता	प्रोत्साहन	500.00
9.	सुश्री सुरभि वत्स	प्रोत्साहन	500.00

घ) हिंदी भाषण प्रतियोगिता।

अनुक्रमांक	प्रतियोगी का नाम	प्रतियोगिता में स्थान	पुरस्कार राशि रू
1.	श्री राजपाल	प्रथम	2000.00
2.	श्री बाला सुब्रमनियन(अहिंदी भाषी)	प्रथम	2000.00
3.	श्री दीपांशु	द्वितीय	1500.00
4.	श्री आयुष बड़ोले	तृतीय	1300.00
5.	श्री रंजन	प्रोत्साहन	500.00
6.	सुश्री मीना	प्रोत्साहन	500.00
7.	श्री राहुल पाठक	प्रोत्साहन	500.00
8.	सुश्री अनीता	प्रोत्साहन	500.00

वर्ष 2022–23 में हिंदी भाषा में सर्वअधिक हिंदी कार्य के लिए पुरस्कृत विजेता।

अनुक्रमांक	प्रतियोगी का नाम	प्रतियोगिता में स्थान	पुरस्कार राशि रू
1.	श्री संजय कुमार	प्रथम	5000.00
2.	श्री द्वैवपन (कोलकाता)	प्रथम	5000.00
3.	श्री गिरीश कुमार गुप्ता	द्वितीय	3000.00

कार्यशाला

"हिंदी भाषा में कार्य करने के लिए तकनीकी का उपयोग"
कार्यशाला में श्री एस बालासुब्रमण्यम(ए एस एम) द्वारा हिंदी में काम करते समय तकनीकी उपयोग की जानकारी दी गई

सेवानिवृत्ति 2023

श्रीमती निर्मला
सहायक पुस्तकालयाध्क्षा
21.11.1989 से 31.12.2023

श्री मान सिंह
वरिष्ठ निजी सहायक
01.08.1990 से 31.01.2023

श्रीमती निर्मला, सहायक पुस्तकालयाध्क्षा व श्री मान सिंह, वरिष्ठ निजी सहायक के द्वारा प्रदान की गई सेवा एंवम अमूल्य योगदान के लिए संस्थान सदैव आभारी रहेंगा और हम आपके उत्तम स्वास्थ्य की मंगलकामना करते है।

यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है
कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है

– लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (3)3 के अंतर्गत अनिवार्य रुप से द्विभाषी जारी किए जाने वाले कागजात

1	सामान्य आदेश	General Orders
2	संकल्प	Resolution
3	परिपत्र	Circulars
4	नियम	Rules
5	प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन	Administrative or other reports
6	प्रेस विज्ञप्तियां	Press Release/Communiques
7	संविदाएं	Contracts
8	करार	Agreements
9	अनुज्ञप्तियां	Licences
10	निविदा प्रारुप	Tender Forms
11	अनुज्ञा पत्र	Permits
12	निविदा सूचनाएं	Tender Notices
13	अधिसूचनाएं	Notifications
14	संसद के समक्ष् रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज पत्र	Reports and documents to be laid before the Parliament

1. क्षेत्र क' से बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड़, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

2. क्षेत्र ख' से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं;

3. क्षेत्र ग' से खंड (1) और (2) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

राजभाषा नियम, 1976

हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा – क, ख, ग में परिभाषित किया गया है।

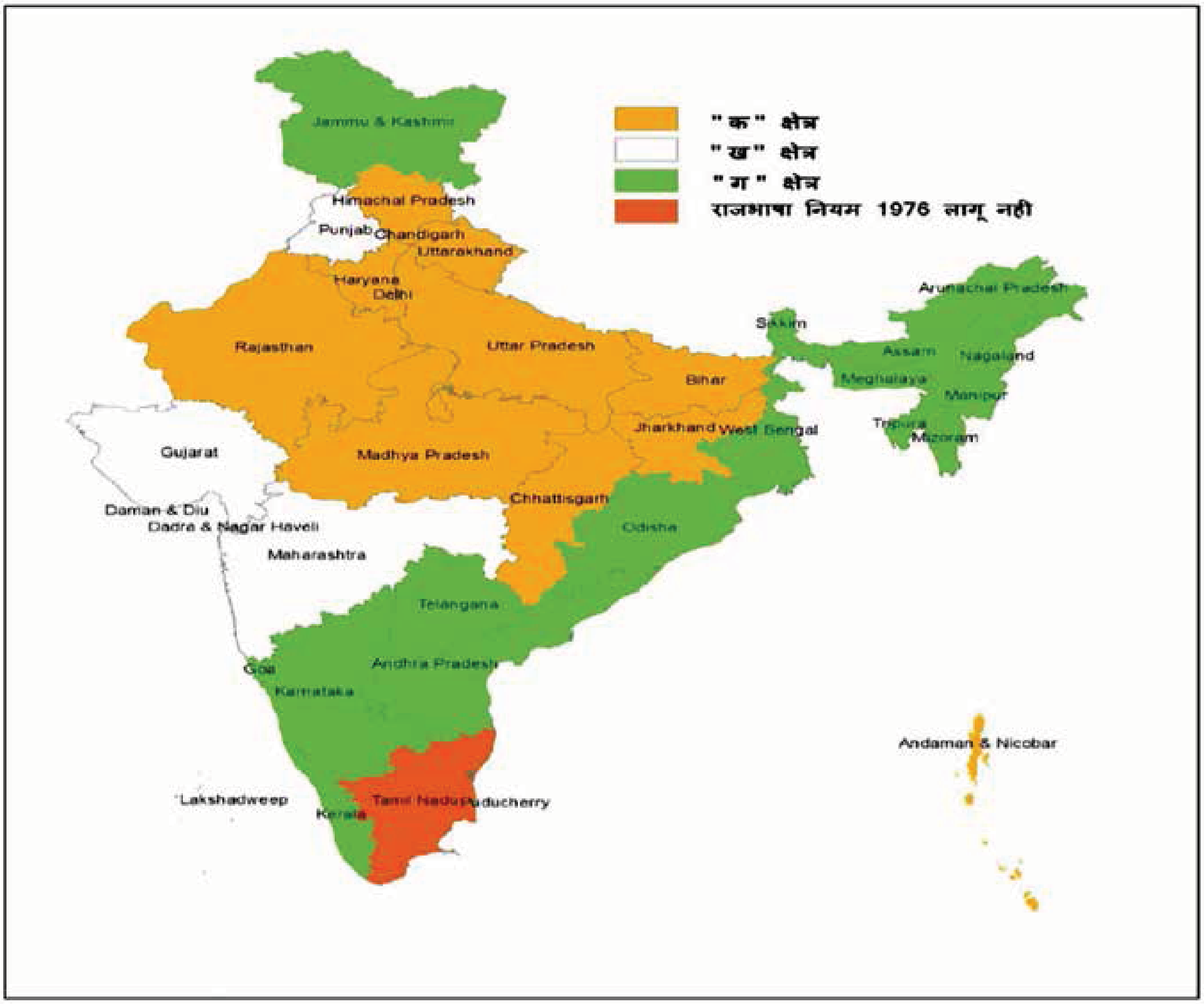

भाषा क्षेत्र	राज्य/संघ राज्य
'क'	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड़, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य हैं
'ख'	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य
'ग'	उपरोक्त निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य

झलकियाँ 2023

IIFT
भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)
56th CONVOCATION
2 नवम्बर 2023, नई दिल्ली / 2nd November 2023, New Delhi

IIFT
भारतीय विदेश व्यापार संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)
56th CONVOCATION
2 नवम्बर 2023, नई दिल्ली / 2nd November 2023, New Delhi

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान

आईटीएस प्रोबेशनर्स के लिए ''अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं व्यवसाय'' पर मार्च 2023 से जनवरी 2024 तक व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान आईटीएस प्रोबेशनर्स का 5 अक्टूबर 2023 को राष्ट्रपति भवन का दौरा

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान

आईटीएस प्रोबेशनर्स के लिए ''अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं व्यवसाय'' पर व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम (मार्च 2023–जनवरी 2024)

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान

24 सप्ताह का सशस्त्र बलों के अधिकारियों के लिए ''व्यवसाय प्रबंधन (मानव संसाधन और वित्त)'' (डीजीआर–11) पर कार्यक्रम (जनवरी–जुलाई 2023)

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

1.	प्रो. सतिंदर भाटिया, कुलपति	अध्यक्ष
2.	डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता, कुलसचिव	सदस्य
3.	श्री विमल कुमार पंडा, सिस्टम प्रबंधक	सदस्य
4.	श्री गौरव गुलाटी, उप कुलसचिव (परियोजना और ई एंड एम)	सदस्य
5.	डॉ. सिद्धार्थ शंकर रॉय, सहायक प्रोफेसर, काकीनाडा	सदस्य
6.	डॉ. कविता वाधवा, सहायक प्रोफेसर, कोलकाता	सदस्य
7.	श्री पार्थ शाह, सहायक कुलसचिव, गिफ्ट सिटी (प्रतिनियुक्ति पर)	सदस्य
8.	सुश्री पी.जी. दीपा, सहायक वित्त अधिकारी	सदस्य
9.	सुश्री नलिनी मेशराम, सहायक कुलसचिव	सदस्य
10.	श्री अनिल कुमार मीणा, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
11.	सुश्री सुमिता मारवाह, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
12.	सुश्री मोहिनी मदान, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
13.	सुश्री ललिता गुप्ता, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
14.	श्री करुण दुग्गल, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
15.	श्री जितेंद्र सक्सेना, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
16.	सुश्री होईजात बाईते, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
17.	श्री राहुल कपूर, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
18.	सुश्री लीना नागवानी, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
19.	श्री द्वैपायन ऐश, अनुभाग अधिकारी	सदस्य
20.	सुश्री सविता अरोड़ा बेदी, निजी सहायक	सदस्य
21.	श्री संजीव कुमार, वरिष्ठ सहायक	सदस्य
22.	सुश्री कविता शर्मा, हिंदी अधिकारी	सदस्य सचिव

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

बी–21, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली – 110016

फोनः 0091–11–39147200, 39147201, 39147202

कोलकाता परिसरः
1583 मदुराहा, चौबघा रोड, वार्ड नंबर 108,
बरो XII कोलकाता–700107

काकीनाडा परिसरः
आईआईएफटी, जेएनटीयू परिसर,
काकीनाडा, आंध्र प्रदेश–533003

गिफ्ट सिटी परिसरः
जीआईएफटी टॉवर–2 (तल 16 एवं 17),
जीआईएफटी सिटी, गांधीनगर, गुजरात–382355

वेबसाइटः www.iift.ac.in